वर्ष 44 अंक 11 नवम्बर 2017

₹ 15/-

हँसती दुनिया

हँसती दुनिया

● वर्ष 44 ● अंक 11 ● नवम्बर 2017 ● पृष्ठ 52

बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी पत्रिका

(पंजाबी, अंग्रेजी व मराठी में भी प्रकाशित)

सी. एल. गुलाटी, प्रभारी पत्रिका विभाग

प्रकाशक एवं मुद्रक राधेश्याम ने सन्त निरंकारी मण्डल, दिल्ली–9 हेतु एम.पी. प्रिंटर्स बी–220 फेस–II, नोएडा–201 305 (उ.प्र.) से मुद्रित करवाकर सन्त निरंकारी सत्संग भवन, सन्त निरंकारी कालोनी, दिल्ली–09 से प्रकाशित किया।

मुख्य सम्पादक : हरजीत निषाद

सम्पादक
विमलेश आहूजा

सहायक सम्पादक
सुभाष चन्द्र

Ph.: 011-47660200
Fax: 01127608215
Email: editorial@nirankari.org
Website: http//www.nirankari.org
kids.nirankari.org

Subscription Value

	India/ Nepal	UK	Europe	USA	Canada/ Australia
Annual	Rs.150	£15	€ 20	$25	$30
5 Years	Rs.700	£70	€ 95	$120	$140

Other Countries

Equivalent to U·S· Dollars as mentioned above.

स्तम्भ

4. सबसे पहले
5. सम्पूर्ण अवतार बाणी
9. समाचार
20. वर्ग पहेली
44. क्या आप जानते हैं ?
46. पढ़ो और हँसो
49. रंग भरो
50. आपके पत्र मिले

चित्रकथाएं

12. दादा जी
34. किट्टी

मुखपृष्ठ : निरंकारी आर्टग्रुप

19

विशेष / लेख

6. बाबा हरदेव सिंह जी महाराज के अनमोल वचन
7. सद्गुरु माता सविन्दर हरदेव जी के दिव्य वचन
8. जब नेहरु जी ने ...
: कमल सोगानी
16. बन्दरों की एक ...
: अर्चना जैन
21. चिंकारा
: डॉ. परशुराम शुक्ल
24. विज्ञान प्रश्नोत्तरी
: डॉ. घमण्डीलाल अग्रवाल
27. ... नई बातें जानें अनार में हैं ...
: विभा वर्मा
38. खिलाड़ियों की लाड़ली
: दीपांशु जैन
40. टुआटेरा
: डॉ. विनोद गुप्ता
46. क्या है यूरेनियम
: डॉ. विनोद गुप्ता

कहानियां

10. व्यर्थ का अभिमान
17. कौवे के प्रश्न और मोर ...
: रूपनारायण काबरा
18. परोपकार में प्रतिफल की ...
: कमल जैन
28. सही कीमत
: राजेन्द्र परदेसी
30. संचय
: फेनम सोगानी
30. जीवन में मिठास घोलो
: ईलू रानी
41. सोनम
: साबिर हुसैन
43. सुकरात की सहनशीलता
: किशोर डैनियल

कविताएं

19. बगिया
: कीर्ति श्रीवास्तव
19. फूल बहुत प्यारे होते हैं
: महेन्द्र जैन
25. प्यारी पुस्तक
: गोविन्द भारद्वाज
25. तितली रानी
: कीर्ति श्रीवास्तव
32. शोर मचाते हैं
: डॉ. परशुराम शुक्ल

जाग्रत बनें

शिक्षक महोदय ने कक्षा में आते ही विद्यार्थियों से पूछा– क्या स्कूल में यूनिफॉर्म (वर्दी) का रंग बदल गया है?

'नहीं सर'। सभी का एक साथ जवाब आया।

शिक्षक ने पुनः पूछा– अगर ऐसा है तो आप सबने सफेद की जगह नीले रंग की शर्ट क्यों पहनी हुई है?

सभी विद्यार्थी अपनी–अपनी शर्ट (कमीज) को देखने लगे। फिर एक–दूसरे के कपड़े देखने लगे लेकिन सभी ने सफेद रंग की कमीज ही पहनी हुई थी। कुछ ने कहा– नहीं सर, हमने तो सफेद रंग की कमीज ही पहनी हुई है।

एक विद्यार्थी ने अध्यापक जी की तरफ ध्यान से देखा और कहा– सर, आज आपने नीले रंग का चश्मा पहना हुआ है। इसलिए आपको हमारी कमीज नीली दिखाई दे रही है।

इस पर शिक्षक ने अपना चश्मा उतारा और कहा– निश्चित ही स्कूल की यूनिफॉर्म में कोई बदलाव नहीं हुआ है और आप सभी ने सही यूनिफॉर्म पहनी है परन्तु मुझे आप सही यूनिफॉर्म में दिखाई नहीं पड़ रहे थे। जब आप में से एक विद्यार्थी ने मुझे बताया है कि मेरा चश्मा ही नीले रंग का है इसीलिए मेरी आँखों को सफेद भी नीला दिखाई पड़ रहा है।

अध्यापक जी अपनी बात को आगे बढ़ाते और समझाते हुए बोले– हमको उसी रंग का दिखाई देगा जिस रंग का हमने चश्मा पहन रखा होगा। हमें जो देखना होता है और जिस तरह से देखना होता है, हम उसी तरह का अपना ढंग बना लेते हैं। दूसरों की बात को हम किस तरह से सुनते हैं और उसका अर्थ लगा लेते हैं, यह हमारी सोच का परिणाम होता है। कोई कितनी भी ज्ञानवर्द्धक बात बताए हम उस बात को अपने ढंग से ही सुनते हैं और उस बात का अपना ही अर्थ दे देते हैं। यहाँ तक ही बात नहीं रहती, हम दूसरों के बारे में अपनी धारणा भी बना लेते हैं और उन पर अनेक तरह की टिप्पणियां करने लगते हैं। यहीं से हमारी हानि आरम्भ हो जाती है। इसलिए हमें दूसरे की कही बात को उसके दृष्टिकोण द्वारा ही समझने की कोशिश करनी होगी। फिर न तो हम दूसरों को गलत समझेंगे और न ही हमारी हानि होगी।

प्यारे साथियों! हम भी यही चाहते हैं कि हम जो भी बात कहें दूसरा उसको उसी तरह से समझे; जैसा हमें दिखाई दे रहा है, दूसरा भी उसे वैसे ही देखे। इसके लिए हमें भी यह प्रयत्न करना पड़ेगा कि हम भी दूसरों की बात को वैसा ही समझें जैसा कि वह हमें कह रहा है, न कि अपना अर्थ उसमें जोड़कर। उसकी दृष्टि से नहीं दृष्टिकोण से देखेंगे तो अपना भी दृष्टिकोण स्पष्ट हो जाएगा और हम उसकी बात भी समझ जाएंगे।

आँख तो केवल बाहर का दृश्य देखती है परन्तु उसके पीछे देखने वाला कोई और होता है। हमारा मन हमें वही–वही दिखाता है जो–जो हम देखना चाहते हैं परन्तु इनके साथ–साथ हमारे पास हमारा विवेक भी होता है जो हमें सचेत करता है। हम सभी को अपने विवेक को जाग्रत करना है। इस हेतु इस वर्ष भी निरंकारी सन्त समागम 18–19–20 नवम्बर, 2017 को दिल्ली में हो रहा है। आप सभी आमंत्रित हैं।

– विमलेश आहूजा

सम्पूर्ण अवतार बाणी

पद संख्या : 160

बोल कबोल ना तोल के बोलें मिट्ठा कदे ना बोलें तूं।
हीरयां वरगा जीवन तेरा विच कौडियां रोलें तूं।
अक्खां अग्गे रब खलोता अक्खां मूल ना खोलें तूं।
झूठी तेरी करनी धरनी झूठो झूठ ही तोलें तूं।
दूजे ते उंगल क्यों करनै जद अपणी ही सार नहीं।
राम राम कर राम नहीं मिलदा दिल विच जेकर प्यार नहीं।
जम दा फंदा गल विच पैसी जे पाया निरंकार नहीं।
निज घर वासा किद्दां होसी जेकर घर दी सार नहीं।
कित्थों लेखा पढ़ सुणासैं बही तां तेरी कोरी ए।
कहे अवतार सुणो रे प्राणी सिर ते झूठ दी बोरी ए।

भावार्थ :

उपरोक्त पद में बाबा अवतार सिंह जी मानव को सचेत करते हुए कह रहे हैं कि इन्सान तू अपने अच्छे–बुरे वचनों को कभी तोलकर नहीं बोलता। तू हमेशा कड़वे वचन बोलता है, कभी मीठे वचन नहीं बोलता। अपने हीरे जैसे जीवन की तू कौड़ियों जितनी कीमत कर रहा है। इन्सान तेरे आगे ईश्वर खड़ा हुआ है लेकिन तू बिलकुल भी अपनी आँखें नहीं खोल रहा है। इस अमूल्य जीवन में तेरी करनी–धरनी सब झूठ पर आधारित हो चुकी है और जीवन की तराजू पर तू सच तोलने की जगह झूठ ही तोल रहा है। तू दूसरों पर उंगली उठाता है लेकिन तुझे अपनी ही सार नहीं है। इन्सान तू इस जीवन में समय रहते ही, निरंकार को सद्गुरु से अंग–संग जान ले। अगर तूने निरंकार का बोध नहीं प्राप्त किया तो यह निश्चित है कि यमराज का मृत्युरूपी क्रूर फंदा तेरे गले में पड़ जायेगा। यदि तुझे अपने मूल घर की पहचान ही नहीं, तुझे अपने घर की सार ही नहीं तो तेरा निज घर में वास भी कैसे हो पायेगा?

बाबा अवतार सिंह जी कह रहे हैं कि इन्सान तू अपना लेखा–जोखा कहाँ पढ़कर सुनाएगा, तेरे जीवन की हिसाब–किताब वाली बही तो कोरी है, इसमें कुछ लिखा ही नहीं है। तेरे सिर पर झूठ का जो गट्ठर है इसे भी तू व्यर्थ ही ढोता फिर रहा है।

बाबा अवतार सिंह जी इन्सान को अपने हीरे जैसे जन्म की कद्र करने, अपनी वाणी को मधुर बनाने और आँख खोलकर इस रमे–राम के दर्शन करने की प्रेरणा दे रहे हैं। इससे ही इन्सान जन्म–मरण के बंधन से छूटकर मुक्ति पद पा सकेगा, अपना जीवन सफल कर सकेगा।

बाबा हरदेव सिंह जी महाराज के अनमोल वचन

★ महान वही है जो महान गुरुओं, अवतारों के आदेशों को अपने जीवन में ढालता है। उन महापुरुषों की महानता का केवल वर्णन करने से कोई महान नहीं बन सकता। वे हमारे महापुरुष महान तो थे ही वे ज्यादा महिमा गाने से ज्यादा महान या कम महिमा गाने से कम महान नहीं हो जायेंगे। हमें उनके आदेशों पर चलकर स्वयं महान बनना है।

★ किसी को पीड़ा पहुँचाना एक पेड़ को कुछ क्षणों में काटने के समान बहुत आसान सा कार्य है लेकिन किसी को सुखी करने के लिए एक पेड़ लगाने के समान धैर्य, संयम और सतर्क होकर देखभाल करने की आवश्यकता होती है।

★ विजेता वे लोग नहीं हैं जो कभी पराजित नहीं हुए बल्कि विजेता वे हैं जिन्होंने हार के डर से मैदान छोड़ देने की गलती नहीं की।

★ विश्व–शान्ति का अध्यात्म ही एक–मात्र साधन है।

★ सही उत्तर एक ही होता है उसे चाहे एक व्यक्ति बताए या एक करोड़।

★ दूसरों को पहुँचाये गये दुःख की मैल गंगा भी नहीं धो सकती।

★ निराकार–प्रभु से नाता जोड़ें, इसी से सभी सुख प्राप्त होते हैं।

★ घृणा–वैर, लोभ–लालच मन के रोग हैं। प्रेम, करुणा, दया आने पर ये रोग चले जाते हैं।

सद्गुरु माता सविन्दर हरदेव जी के दिव्य वचन

- ✯ प्रेम की भाषा ही सबसे प्यारी भाषा है। हमने प्यार से परस्पर सद्भावपूर्ण वातावरण बनाना है।
- ✯ कुछ भी हो सिर्फ प्यार ही प्यार हो।
- ✯ आओ, मानवीय मूल्यों की कद्र करें।
- ✯ सबके जीवन में सरलता बनी रहे।
- ✯ सेवा हर गुरसिख के लिए वरदान।
- ✯ समदृष्टि के भाव को अपनायें।
- ✯ गुरसिख की पहचान को बरकरार रखें।
- ✯ सन्त के कर्म ही उसके जीवन की पहचान।
- ✯ सन्तजन परहित के भाव को विशेषता देते हैं।
- ✯ प्रभु के प्रति शुकराने का भाव सदैव बना रहे।
- ✯ प्रभु के बिना इन्सान का कोई अस्तित्व नहीं।
- ✯ हम सँवरे तो दुनिया अपने आप सँवर जायेगी।
- ✯ निःस्वार्थ भाव से की जाने वाली सेवा ही श्रेष्ठ है।
- ✯ सब मिल–जुलकर मिशन के विकास में योगदान दें।
- ✯ मानवता की खातिर दिये गये बलिदानों की कद्र करें।
- ✯ एकत्व से ही 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का भाव साकार होगा।
- ✯ सकारात्मक सोच से ही जीवन खुशहाल हो सकता है।
- ✯ खुदी को मिटाने वाला ही भक्ति मार्ग पर परवान होता है।
- ✯ सन्त का जीवन फूल की तरह खुशबू देने वाला होता है।
- ✯ अवतारी महापुरुषों ने सदैव इन्सानियत का पाठ ही पढ़ाया।
- ✯ जहाँ निरंकार होता है वहाँ अभिमान कभी ठहर ही नहीं सकता।

संग्रहकर्ता : श्रीराम प्रजापति

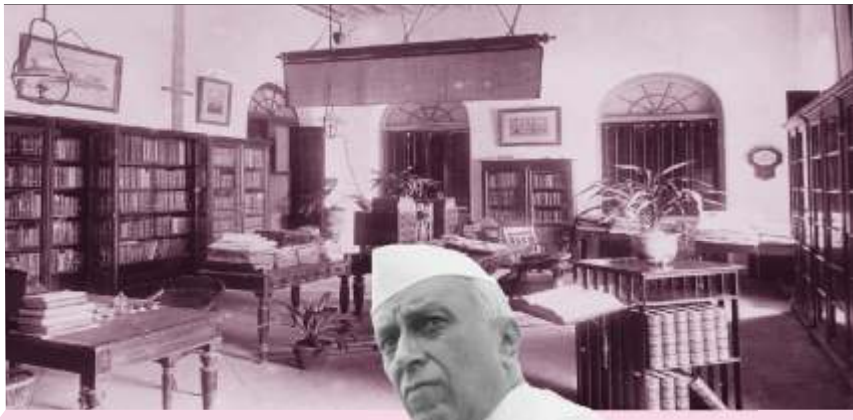

प्रेरक–प्रसंग : कमल सोगानी

जब नेहरुजी ने अखबार के दफ्तर में सफाई की

क्रांतिकारी गणेश शंकर विद्यार्थी देश को आजाद देखना चाहते थे। इसीलिए जन–जन तक आजादी का 'अलख जगाने' के लिए उन्होंने कानपुर से एक अखबार की शुरुआत की।

गणेश शंकर विद्यार्थी के अखबार एवं उसमें छपे लेख से नेहरुजी बड़े प्रभावित हुए और एक पत्र में लिखा–

''मैं शीघ्र ही तुमसे मुलाकात करने तुम्हारे अखबार के दफ्तर में आऊंगा।''

नेहरुजी का पत्र पढ़कर नेहरुजी के आने की बात वे अखबारी भाग–दौड़ में भूल गये। वे अक्सर व्यस्त रहा करते, इस कारण अपने अखबार के दफ्तर की सफाई भी ठीक ढंग से नहीं रख पाते।

उनके दफ्तर में, एक तरफ छपने वाले अखबारों का ढेर तो दूसरी तरफ डाक से आये लिफाफे के थप्पे, यही नहीं उनकी मेज पर भी कागजात फैले रहते व धूल के कण स्पष्ट दिखाई देते थे, ऐसे में ही वे अपना काम चला लिया करते।

अपने पत्र के मुताबिक नेहरुजी, 'गणेश शंकर विद्यार्थी' के दफ्तर में आये। लेकिन वे वहाँ थे नहीं। प्रतीक्षा में नेहरुजी को बैठना पड़ा।

नेहरुजी ने देखा मेज पर कागज़ बेतरतीब बिखरे पड़े थे, उन्होंने प्रतीक्षा के समय का उपयोग करते हुए वे सभी कागज ठीक ढंग से जमाए और कपड़े से मेज कुर्सी की धूल साफ कर दी।

गणेश शंकर विद्यार्थी जब आये और नेहरु जी को सफाई करते देखा, तो तुरन्त उन्होंने नेहरूजी से क्षमा मांगी और आगे से नित्य सफाई रखने की आदत बना ली।

रजनी ने 'वर्ल्ड पुलिस एण्ड फायर गेम्स' में जीते गोल्ड सहित चार पदक

दिल्ली, 10 सितम्बर। अमेरिका के लॉस एंजिल्स में 4 से 17 अगस्त तक आयोजित 'वर्ल्ड पुलिस एण्ड फायर गेम्स' में पंजाब पुलिस की हवलदार और उपमंडल के गाँव चंदभान निवासी रजनी डेनवाल ने एयर राइफल शूटिंग मुकाबले में चार मेडल जीतकर देश का नाम रोशन किया है।

रविवारीय सत्संग समारोह में सद्गुरु माता सविन्दर हरदेव जी महाराज से रजनी ने आशीर्वाद प्राप्त किया। इस अवसर पर समाज कल्याण विभाग के प्रभारी श्री पी. एस. चीमा ने भी किरण डेनवाल को शुभकामनाएं दी।

इससे पहले विगत दिनों रजनी के जैतो पहुँचने पर पुलिस विभाग, शहरवासियों और ग्रामीणों ने भव्य स्वागत किया। इस मौके पर पुलिस विभाग के सहयोग से स्थानीय रेलवे स्टेशन पर आयोजित समारोह में डीएसपी बलजिंदर सिंह, थाना प्रभारी सुनील शर्मा और उसके कोच दविंदर बाबू की सरपरस्ती में रजनी और उसके परिवार का सम्मान किया गया।

(प्रेषक : शम्भू– मस्ताना)

पौराणिक बोधकथा

व्यर्थ का अभिमान

एक बार देवताओं और असुरों ने मिलकर समुद्र मंथन किया। समुद्र मंथन के लिए मन्द्राचल पर्वत को मथानी के रूप में प्रयोग किया गया था। इस मथानी को घुमाने के लिए नागराज वासुकी को रस्सी की तरह प्रयोग किया गया था। जब सारी व्यवस्था हो गई, मन्द्राचल पर्वत के आस–पास नागराज वासुकी को लपेट दिया गया, तो देवताओं में से एक ने अपने अन्य साथियों से कहा, ''मंथन के समय नागराज वासुकी का बदन मन्द्राचल पर्वत से रगड़ खायेगा। इससे वासुकी अवश्य क्रोधित हो उठेगा। इस बात की पूरी सम्भावना है कि क्रोधित होकर वह अपने मुँह के पास खड़े कुछ लोगों को काट ले।''

अपने साथी की बात सभी देवताओं को तर्कसंगत लगी। सोच–विचार के बाद यही निर्णय लिया गया कि कोई ऐसी तरकीब की जाए जिससे असुर वासुकी के मुँह की ओर रहें तथा देवता उसकी पूंछ की ओर। अब समस्या यह थी कि असुरों को नागराज वासुकी की मुँह पकड़ने के लिए तैयार कैसे किया जाए?

देवगुरु बृहस्पति ने समझाते हुए कहा, ''यदि हम असुरों से इस विषय में कोई बातचीत करेंगे तो वे अवश्य ही हमें ही वासुकी का मुँह पकड़ने के लिए विवश कर देंगे। यह समस्या बातचीत से नहीं, नीति से हल करनी होगी।''

गुरुदेव की बात सुनकर सभी उत्साहपूर्वक उनकी ओर देखने लगे। देवराज इन्द्र ने विनयपूर्वक कहा, ''गुरुदेव, आप ही कोई उपाय बताएं।''

देवगुरु बृहस्पति बोले, ''असुर अभिमानी हैं। अभिमानी व्यक्ति बुद्धि का प्रयोग नहीं कर पाता। कोई भी निर्णय लेते समय अभिमानी व्यक्ति उसके तर्कसंगत होने का इतना महत्व नहीं देता जितना अपने अहम् की तुष्टि को

देता है। असुरों की इस कमजोरी का लाभ उठाना चाहिए।'' एक पल रूककर गुरुदेव आगे बोले, ''तुम सभी भागकर नागराज वासुकी को मुँह की ओर से पकड़ लो। अभिमानी असुर अवश्य हमारी नकल करेंगे। बस, हमारा काम बन जाएगा।''

देवताओं ने गुरुदेव बृहस्पति के आदेश का पालन किया। सभी जाकर वासुकी के मुँह की ओर खड़े हो गए। जब असुरों ने देवताओं को अपने आप नागराज वासुकी के मुँह की ओर खड़े होते देखा तो वे शंकित हो उठे। उन्हें इसमें देवताओं की कोई चाल लगी।

असुरराज एकदम आगे बढ़ा और देवराज इन्द्र से बोला, ''हम लोगों से बात किए बिना तुम लोग वासुकी के मुँह की ओर कैसे खड़े हो गए हो? यह निर्णय तो हम सबने मिलकर लेना है कि सर्पराज को मुँह की ओर से कौन पकड़ेगा तथा पूंछ की ओर से कौन?''

असुरराज की इस बात पर देवराज इन्द्र बोला, ''इसमें सोचना क्या है? हम देवता हैं। सभी लोग हमारा आदर करते हैं। समाज में हमारा विशिष्ट स्थान है। हम वासुकी को पूंछ की ओर से कैसे पकड़ सकते हैं? हम कुलीन लोग नागराज को मुँह की ओर से ही पकड़ेंगे, पूंछ की ओर से तुम असुर पकड़ोगे।''

देवराज इन्द्र के उत्तर से अभिमानी असुरराज तिलमिला उठा। वह अभिमान में भरकर बोला,

''तुम्हें अपने देवता होने का अभिमान है तो हमें भी अपने असुर होने का गर्व है। हम शक्ति में तुमसे किसी प्रकार भी कम नहीं। हम अनेकों बार युद्ध में तुम्हारे दांत खट्टे कर चुके हैं। हम तुम्हारे दबाव में आने वाले नहीं। वासुकी के मुँह की ओर हम रहेंगे। तुम्हें उसे पूंछ की ओर से पकड़ना होगा।''

देवराज इन्द्र ने जोश में भरकर कहा, ''यह असम्भव है। हम देवता वासुकी को मुँह की ओर से ही पकड़ेंगे, पूंछ की ओर से तुम्हें ही पकड़ना पड़ेगा। पूंछ की ओर खड़े होकर हम अपना अपमान नहीं करवा सकते।''

असुरराज ने फुफकारते हुए उत्तर दिया, ''तुम्हारा अपमान हो या सम्मान, इस बात से हमें कोई मतलब नहीं। यदि समुद्र मंथन करना चाहते हो तो तुम्हें हमारी बात माननी ही पड़ेगी। हम वासुकी को मुँह की ओर से पकड़ेंगे, और पूंछ की ओर से देवता पकड़ेंगे।''

देवराज इन्द्र के बोलने से पहले ही देवगुरु बृहस्पति ने बीच–बचाव करने के भाव में कहा, ''देवराज इन्द्र, यह समय सम्मान या अपमान पर अड़ने का नहीं है। यदि हम अड़े रहे तो समुद्र मंथन नहीं हो पायेगा। इसलिए हमें वह काम करना चाहिए जिससे सबका भला हो। इसी में हम सबका सम्मान है।''

फिर देवगुरु बृहस्पति ने असुरराज से कहा, ''असुरराज, हम वासुकी को पूंछ की ओर से पकड़कर समुद्र मंथन करने के लिए तैयार हैं। आप असुर ही वासुकी को मुँह की ओर से पकड़े। अब शीघ्रता करें ताकि कार्य आरम्भ किया जा सके।''

असुरों ने वासुकी को मुँह की ओर से पकड़ लिया तथा देवताओं ने पूंछ की ओर से, और समुद्र मंथन आरम्भ हो गया। जैसे–जैसे मन्द्राचल पर्वत की मथानी तेजी से घूमने लगी, वैसे–वैसे नागराज वासुकी के शरीर में पीड़ा सी उठने लगी। क्रोधित होकर नागराज फुफकारने लगा तथा उसने कई असुरों को डस लिया। उसकी फुफकार से निकलने वाली विषमय वायु के प्रभाव से कई असुर मूर्छित हो गए। इसके विपरीत देवता बिना किसी हानि के समुद्र मंथन सम्पन्न कर पाए।

अभिमानी व्यक्ति की ऐसी ही दुर्गति होती है। यदि असुर व्यर्थ का अभिमान न करते और सारी बात को विवेकपूर्वक विचारते तो उन्हें हानि न उठानी पड़ती।

('सुना आप से–कहा आप से' में से)

दादा जी

चित्रांकन एवं लेखन
अजय कालड़ा

यही सोचकर उसने अगले घर का दरवाजा खटखटाया। वह दरवाजा एक लड़की ने खोला। उस लड़के की हिम्मत टूट–सी गई।
उसने खाने की जगह सिर्फ पानी मांगा। पर उस लड़की ने पानी न लाकर एक गिलास भरकर दूध दे दिया।
उस लड़के ने दूध पीकर उस लड़की से पूछा– ''दीदी मेरे पास इस दूध की कीमत के लिए पैसे नहीं हैं। मैं आपका अहसान कैसे चुकाऊँ।''
वह लड़की हँस पड़ी और बोली– हमारे मम्मी–पापा कहते हैं कि किसी की सेवा, स्वार्थ या लाभ के लिए नहीं की जाती। तुम भूखे लग रहे थे इसलिए मैंने दूध दे दिया।

लड़के ने दिल से उस लड़की का शुक्रिया अदा किया और वहाँ से चला गया।
काफी साल बीत गए। वह गरीब लड़का बड़ा हुआ तो विश्व में डॉक्टर हावर्ड कैली के नाम से प्रसिद्ध हुआ।
बच्चो, डॉक्टर हावर्ड कैली ने ही सबसे पहले रेडियम का इस्तेमाल किया था। कैंसर को ठीक करने के लिए उन्होंने कई नई चीजों का आविष्कार भी किया था।
जब डॉक्टर कैली अपने अस्पताल में काम कर रहे थे तो उन्हें खबर मिली कि एक बहुत बीमार औरत अस्पताल आई है।

जब उन्होंने उस औरत के गाँव का नाम सुना तो वह भागते हुए आए। यह वही औरत थी जिन्होंने उनको दूध दिया था। पर वह औरत डॉक्टर को पहचान नहीं पाई।

डॉक्टर कैली ने बहुत मेहनत की और उस औरत को ठीक कर दिया।

जब उस औरत के आगे अस्पताल का बिल आया तो उसने घबराते हुए बिल खोला। उसे पता था कि बिल भुगतान करते–करते उसकी जिन्दगी बीत जाएगी।

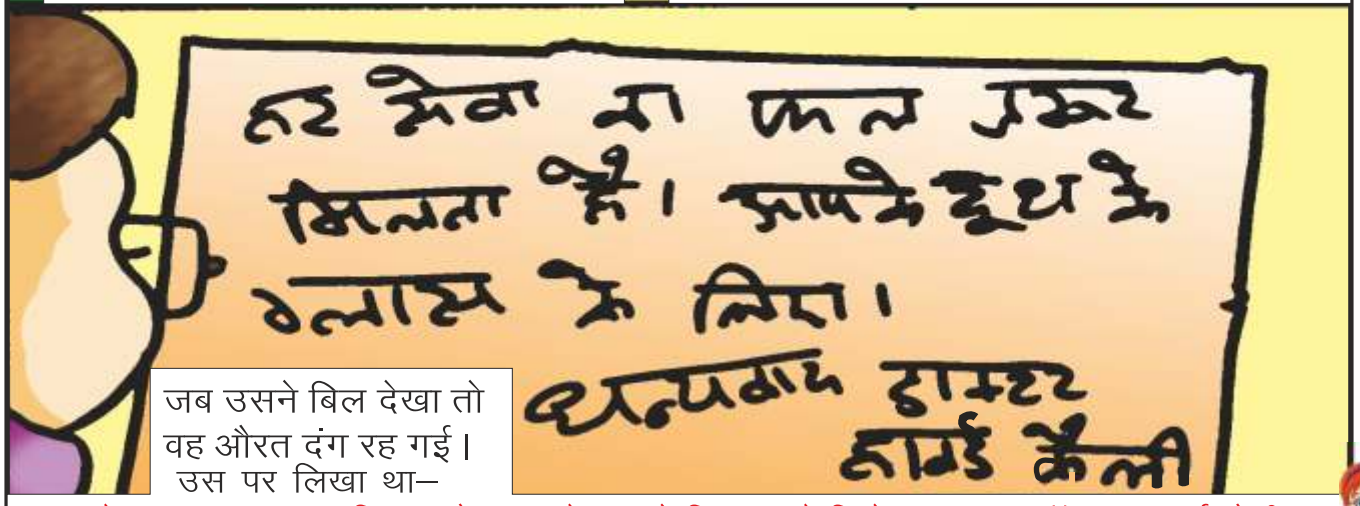

जब उसने बिल देखा तो वह औरत दंग रह गई। उस पर लिखा था–

''हर सेवा का फल जरूर मिलता है। आपके दूध के गिलास के लिये धन्यवाद। डॉक्टर हावर्ड कैली''

यह पढ़कर उस औरत की आँखों में आंसू आ गये और उसका भगवान पर विश्वास और दृढ़ हो गया।

प्रस्तुति : अर्चना जैन

बन्दरों की एक अद्भुत जगह

सर्दी तो बन्दर को भी लगती है। सर्दी के कारण उसका बदन सुस्त और बेजान–सा हो जाता है। उछलने–कूदने और पेड़ों पर चढ़ने में उसका शरीर काम नहीं करता। अपने सुस्त शरीर में फिर से जान फूंकने के लिए बन्दर खौलते पानी में जी–भरकर नहाता है और नहाते ही उछलते–कूदते हुए पेड़ों पर जा पहुँचता है। लेकिन यह बात है जापानी बन्दरों की।

हाँ, जापान में एक ऐसी अद्भुत जगह है, जहाँ बन्दरों को खौलते पानी में रहकर अपनी जान बचानी पड़ती है। दरअसल जापान के नागानो शहर की घाटी में दिसम्बर से मार्च के बीच बहुत ज्यादा बर्फ गिरती है। वैसे यह क्षेत्र मौत की घाटी के रूप में भी मशहूर है। हालांकि इस घाटी में ''जिगोकदानी मंकी'' पार्क भी है, जहाँ बड़ी संख्या में लाल व काले मुख वाले बन्दर रहते हैं। सर्दी में जान बचाने के लिए बन्दरों को खौलते पानी में रहना पड़ता है। इस इलाके में एक कुंड है जहाँ का पानी खौलता रहता है। वैसे एडवेंचर के शौकीन लोग इस इलाके में घूमने के लिए भी आते हैं, स्नान करते बन्दरों की भिन्न–भिन्न हरकतें देखकर उन्हें अपने कैमरे में भी कैद करते हैं।

जिस विशाल कुंड में बन्दर नहाकर अपनी सर्दी दूर भगाते हैं, वह कुंड ''कुदरती कुंड'' है और सदियों पुराना है। कहा जाता है पहाड़ों के गर्भ से जो पानी इस कुंड में पहुँचता है उसमें प्राकृतिक गंधक की मात्रा अधिक रहती है, जो पानी के तापमान में वृद्धि कर देता है।

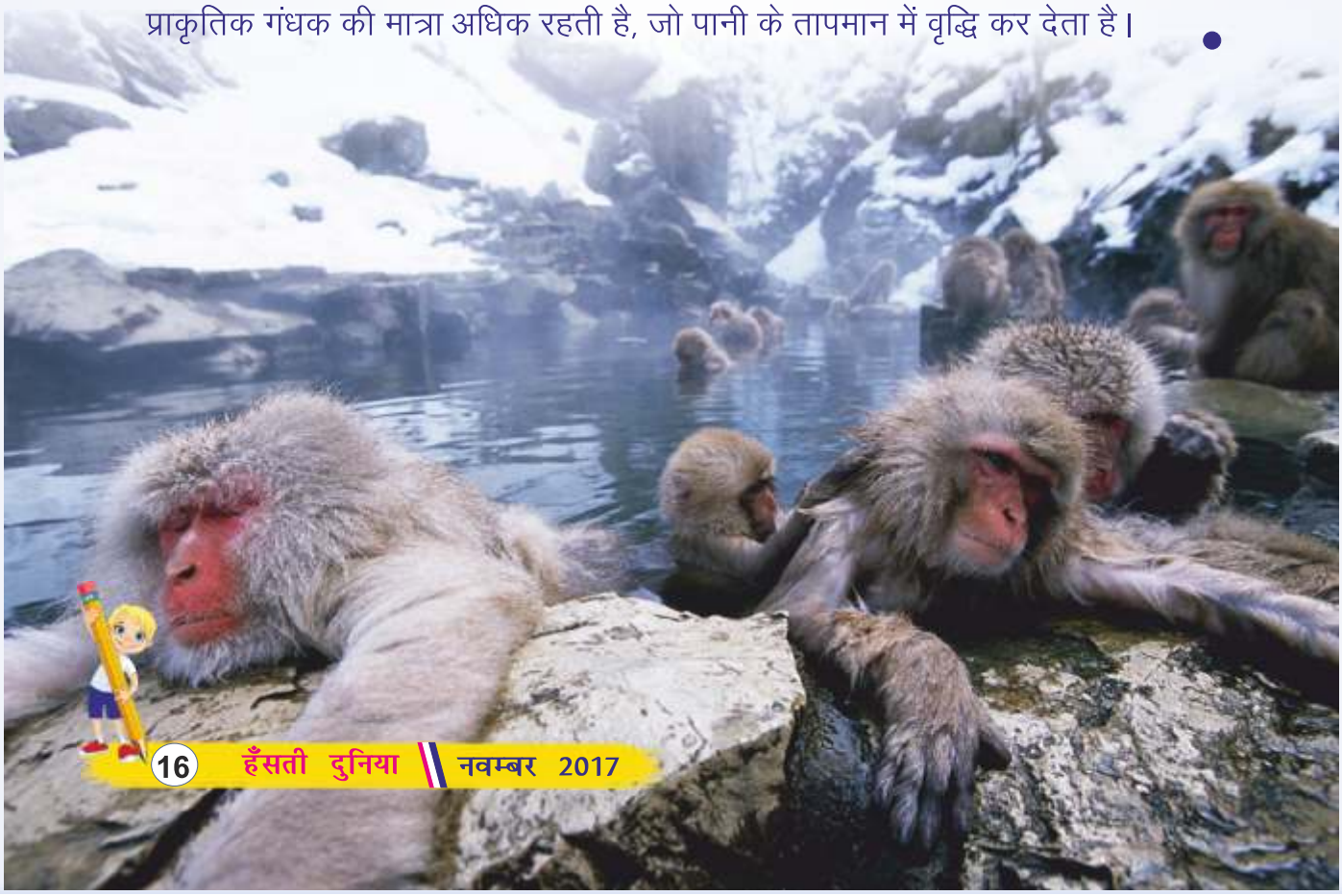

बाल कहानी : रूपनारायण काबरा

कौवे के प्रश्न और मोर की सीख

एक कौवा सोचने लगा कि पक्षियों में, मैं सबसे ज्यादा कुरूप हूँ, न तो मेरी आवाज ही अच्छी है और न ही मेरे पंख सुन्दर हैं। मैं काला हूँ। ऐसा सोचने से उसके अन्दर हीन भावना घर करने लगी और वह दुखी रहने लगा। एक दिन एक बगुले ने उसे उदास देखा तो उसकी उदासी का कारण पूछा।

कौवे ने कहा– तुम कितने सुन्दर हो। मेरा तो जीना ही बेकार है।

बगुला बोला– दोस्त मैं कहाँ सुन्दर हूँ? मैं जब तोते को देखता हूँ तो यही सोचता हूँ कि मेरे पास हरे पंख और लाल चोंच क्यों नहीं है।

अब कौवे में सुन्दरता को जानने की उत्सुकता बढ़ी। वह तोते के पास गया और बोला– तुम इतने सुन्दर हो, तुम तो बहुत खुश रहते होगे?

तोता बोला– खुश तो था लेकिन जब से मैंने मोर को देखा है तब से दुखी हूँ क्योंकि वह बहुत सुन्दर है।

कौवा मोर को ढूंढ़ने लगा, लेकिन जंगल में एक भी मोर कहीं नहीं मिला। जंगल के पक्षियों ने बताया कि सारे मोर चिड़ियाघर वाले पकड़कर ले गये हैं। कौवा चिड़ियाघर गया, वहाँ एक पिंजरे में बन्द मोर से जब उसने सुन्दरता की बात की तो मोर रोने लगा। रोते–रोते बोला– शुक्र मनाओ कि तुम सुन्दर नहीं हो, तभी आज़ादी से घूम रहे हो वरना मेरी तरह तुम भी किसी पिंजरे में बंद होते।

कहानी का सार : दूसरों से तुलना करके दुखी होना बुद्धिमानी नहीं है। असली सुन्दरता हमारे अच्छे कार्यों से आती है। मनुष्य की वास्तविक सुन्दरता उसके अच्छे कार्यों से ही होती है।

बोधकथा : कमल जैन

परोपकार में प्रतिफल की कल्पना ...

कंचनपुर में लक्ष्मीनारायण नाम के एक सेठजी थे। वे समाजसेवी और बड़े उदार हृदय वाले थे, उनके पास दौलत की कोई कमी नहीं थी। जरूरतमंदों की खूब मदद किया करते। दूर–दूर से लोग अपनी समस्या लेकर उनके पास आते और वे चुटकियों में उन्हें हल कर देते।

एक बार कुछ लोग चिकित्सालय हेतु उनके पास आये और बोले– ''गोली दवाईयों हेतु दान दीजिए।''

''आपको कितने पैसे चाहिए?'' सेठजी ने पूछा।

चंदा लेने आये लोगों में से एक शख्स ने कहा– ''यदि आप पचास हजार रुपये का दान देंगे तो आपका नाम अस्पताल के मुख्य द्वार पर लगने वाले शिलालेख पर बड़े–बड़े अक्षरों में अंकित किया जाएगा।

यह सुनकर सेठजी ने तुरन्त अपनी तिजोरी से रुपये गिनकर उन लोगों के समक्ष रख दिये और अत्यंत विनम्रता से उन्हें गिन लेने का आग्रह किया।

सदस्यों ने रुपये गिने तो पाया कि पचास हजार में मात्र एक रुपया कम है। उन्होंने तुरन्त सेठजी से कहा– मात्र एक रुपया और देने पर पचास हजार रुपये पूरे हो जाएंगे।

इस पर सेठजी बोले– मेरे लिए इतना ही दान उत्तम है। मैं पूरे पचास हजार रुपये देकर अपना नाम प्रचारित नहीं करवाना चाहता। विज्ञापन से दान का महत्व नष्ट हो जाता है। महत्व चिकित्सालय के उद्देश्य का रहना चाहिए, न कि दानदाता के नाम का। यदि दान को प्रचारित किया जाए तो निर्धन व्यक्ति को त्याग व सेवा करने की प्रेरणा कैसे मिलेगी? सेवा से मिलने वाला आनंद पत्थर पर नाम अंकित करवाने से नहीं मिलेगा। हाँ, परोपकार में प्रतिफल की कल्पना नहीं होनी चाहिए क्योंकि वह निःस्वार्थ सेवा की दिव्य सुखानुभूति को समाप्त कर देती है।

सेठजी की इस बात से वे लोग बड़े प्रभावित हुए और चन्दा लेकर चल पड़े।

बाल कविता : कीर्ति श्रीवास्तव

बगिया

बगिया मेरी सबसे प्यारी।
दिखती है ये सबसे न्यारी।
भांति–भांति के फूल खिले हैं।
रंग–बिरंगी लगती क्यारी।

गुलाब तो होता कांटों से भरा।
पर दिखता वो सबसे भला।
संग कांटों के रहने पर भी।
खुश करता सबको वो सदा।

गेंदे की भी बात अलग है।
बसंती और लाल रंग है।
छोटा हो या हो बड़ा।
भगवान की जाता शरण है।

फूल सभी होते हैं सुन्दर।
रंग–रूप का होता बस अंतर।
खुशबू से महकाते चमन हैं।
हो जैसे कोई जादू–मन्तर।

बालगीत : महेन्द्र जैन

फूल बहुत प्यारे होते हैं

फूल बहुत प्यारे होते हैं,
आँखों के तारे होते हैं।

रंग–बिरंगे जब खिल जाते,
उपवन का भी रूप सजाते।
इनकी खुशबू मन को भाती,
हर दिल पर जादू कर जाती।

ये देवों के चरण सजाते,
घर आंगन की शान बढ़ाते।
सबसे ये न्यारे होते हैं,
फूल बहुत प्यारे होते हैं।

वर्ग पहेली

प्रस्तुति : विकास अरोड़ा
(रेवाड़ी)

	1		2			3
4						
			5		6	
7						
				8		9
10		11				
12				13		
		14				

बाएं से दाएं

2. जनवरी और मार्च के कुल दिनों के जोड़ से बीस कम।
4. ईसाइयों की प्रसिद्ध धार्मिक पुस्तक।
5. राजकोट और रायपुर में से जो शहर गुजरात राज्य में है।
7. मेहनत का एक पर्यायवाची शब्द।
8. जून के बाद आने वाला महीना।
11. इस पंक्ति में छुपे एक फल का नाम ढूंढिए :
    कल सभी संत रायपुर में सत्संग करेंगे।
12. एक छात्र ने 500 में से 250 अंक प्राप्त किए। उसने कितने प्रतिशत अंक प्राप्त किए?
13. सिडनी और मास्को में से जो शहर आस्ट्रेलिया में है।
14. शुद्ध शब्द छांटिए : दर्शक / दर्सक।

ऊपर से नीचे

1. अबूजा किस देश की नई राजधानी है?
2. भगवान श्रीकृष्ण के भाई का नाम।
3. शुद्ध शब्द छांटिए : सर्माट / सम्राट।
6. सरोजिनी नायडू को 'भारत .....' के नाम से जाना जाता है।
8. हिन्दी भाषा में डब होने वाली पहली हालीवुड फिल्म डायनासोरों पर आधारित '.... पार्क' थी।
9. मोदी जी की सरकार में स्मृति .... मंत्री हैं।
10. पांडवों की पत्नी का नाम।
11. लोकसभा और राज्यसभा को संयुक्त रूप से .... कहते हैं।

(वर्ग पहेली के उत्तर इसी अंक में हैं)

विशेष लेख : डॉ. परशुराम शुक्ल

राजस्थान का राज्य पुशः चिंकारा

चिंकारा एक सुन्दर एवं आकर्षक वन्य प्राणी है। इसे अंग्रेजी में 'रेवीन डिअर' अर्थात् चट्टानी दरारों में रहने वाला हिरन कहते हैं, किन्तु यह हिरन नहीं है बल्कि कृष्णमृग के समान एक गवय (एन्टीलोप) है। इसे भारतीय गजेल भी कहते हैं। यह एक करोड़ बीस लाख वर्ष पुराना ऐसा वन्यजीव है, जिसके रूप–रंग, आकार और संरचना आदि में कोई विशेष परिवर्तन नहीं हुआ है। गजेल की ग्यारह जातियां हैं, जिनके रूप–रंग, आकार और आदतों में पर्याप्त भिन्नता होती है। यह मुख्य रूप से उत्तरी और पूर्वी अफ्रीका तथा एशिया के विभिन्न भागों में पाया जाता है। गजेल की सभी जातियों में अल्जीरिया, मिस्र और सूडान में पाया जाने वाला गजेल सर्वाधिक प्रसिद्ध है। यह सबसे छोटा गजेल है। इसकी कंधों तक की ऊँचाई 50 सेंटीमीटर से अधिक नहीं होती। पूर्वी अफ्रीका के जंगलों में पाया जाने वाला भीमकाय गजेल सबसे बड़ा होता है। इसकी लम्बाई एक मीटर तक होती है। साइबेरिया, मंगोलिया, चीन तथा तिब्बत में भी गजेल की तीन विशिष्ट जातियां पायी जाती हैं, किन्तु इनके विषय में अधिक जानकारी उपलब्ध नहीं है।

भारतीय गजेल अर्थात् चिंकारा भारत के उत्तरी–पश्चिमी एवं मध्यभाग से लेकर दक्षिण में कृष्णा नदी तक के भागों में पाया जाता है। यह खुले जंगलों में, घास के मैदानों एवं अर्धरेगिस्तानी भागों में रहना अधिक पसन्द करता है।

चिंकारा प्रायः अकेले अथवा दो–तीन के झुण्ड में विचरण करता है, किन्तु कभी–कभी इसके 20–25 के झुण्ड भी देखने को मिल जाते हैं। इसकी बहुत–सी आदतें कृष्णमृग से मिलती–जुलती हैं। चिंकारा एक ऐसा गवय है जो सीधी खड़ी चट्टान पर भी सरलता से चढ़ जाता है। इसकी एक महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि यह एक ही तरफ के दोनों पैर आगे बढ़ाकर चलता है। इसके साथ ही यह अपने चारों पैरों को एक–दूसरे के निकट लाकर अपने शरीर को वक्राकार भी बना सकता है। इसके पैरों के इन्हीं विशिष्ट गुणों ने इसे छलांगें लगाते हुए तेज भागने वाला वन्य जीव बना दिया है।

चिंकारा हिरन के समान रंग–रूप वाला इकहरे शरीर का छोटा–सा सुन्दर गवय है। यह कृष्णमृग से छोटा होता है। इसकी कंधों तक की ऊँचाई 60 सेंटीमीटर से 65 सेंटीमीटर तक एवं शरीर की लम्बाई 60 सेंटीमीटर से 75 सेंटीमीटर तक तथा वजन 20 किलोग्राम से 25 किलोग्राम के मध्य होता है। इसके सर, पीठ और पैरों का अधिकांश भाग लाली लिये हुए भूरा अथवा हल्के बादामी रंग का होता है एवं पेट व दोनों तरफ की बगलें, पैरों का भीतरी भाग, पूँछ के नीचे का भाग सफेद होता है। चिंकारा की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसके चेहरे पर चारों ओर सफेद रंग की एक पतली–सी धारी होती है जो आँखों के नीचे से होकर गले के नीचे के भाग से मिल जाती है। इसके चेहरे का शेष भाग लाली लिये हुए हल्के भूरे रंग का होता है। चिंकारा की गर्दन लम्बी और लोचदार होती है। यह अपने स्थान पर खड़े रहकर अथवा भागते

हुए सरलता से पीछे मुड़कर देख सकता है। इसकी पूँछ छोटी और काले रंग की होती है तथा हमेशा गतिशील रहती है। गर्मियों के दिनों में जब सूरज ऊपर होता है और छाया बहुत छोटी बनती है। उस समय चिंकारा का हल्के भूरे रंग का शरीर अपने आसपास के स्थान से इतना मिल जाता है कि यदि वह शान्त खड़ा हो जाये तो दिखाई नहीं देगा। इस समय इसकी लहराती हुई पूँछ से ही इसकी उपस्थिति का आभास होता है। चिंकारा की पूँछ हमेशा सक्रिय रहती है। इसी से इसे घास के मैदानों में चरते समय पहचाना जा सकता है। चिंकारा के पैर बहुत पतले होते हैं, किन्तु इसकी चाल बड़ी सुन्दर और आकर्षक होती है। इसकी श्रवणशक्ति, घ्राणशक्ति और दृष्टि सामान्य होती है, किन्तु यह हमेशा सजग रहता है और खतरे का आभास होते ही तेजी से भागकर सुरक्षित स्थान पर पहुँच जाता है।

चिंकारा के सींग कृष्णमृग के समान ही सुन्दर और आकर्षक होते हैं, किन्तु ये कृष्णमृग के सींगों के समान ऐंठे हुए न होकर छल्लेदार होते हैं। सामान्यतया छल्लों की संख्या 15 से लेकर 25 तक होती है। चिंकारा के सींगों की लम्बाई 25 सेंटीमीटर से 30 सेंटीमीटर तक होती है। अभी तक के सबसे लम्बे सींगों का कीर्तिमान 40 सेंटीमीटर राजस्थान के एक चिंकारा का है। इसके सींग सामने से तो कृष्णमृग के समान अंग्रेजी के 'वी' की तरह दिखायी देते हैं किन्तु इनका आकार 'एस' के समान होता है। ये नीचे और ऊपर से 'एस' के समान विपरीत दिशाओं में मुड़े होते हैं। इसके सींगों में कृष्णमृग के सींगों जैसे छल्ले तो होते हैं, किन्तु ये ऐंठे हुए नहीं होते। चिंकारा के सींग ऊपर की ओर निकले हुए नुकीले तथा मजबूत होते हैं। यह इनका उपयोग अपने क्षेत्र की सीमा रक्षा के लिये एवं शत्रुओं से लड़ते समय करता है। चिंकारा भारत में पाया जाने वाला एकमात्र ऐसा गवय है जिसमें मादा के भी सींग होते हैं। मादा चिंकारा के सींग छोटे होते हैं। इनकी लम्बाई 10 सेंटीमीटर से 13 सेंटीमीटर के मध्य होती है। नर चिंकारा एक सुन्दर वन्यप्राणी है, किन्तु मादा की संरचना में कोई विशेष सुन्दरता या आकर्षण नहीं होता।

चिंकारा शाकाहारी वन्यजीव है। यह प्रातःकाल अकेले अथवा दो–तीन के झुंड में भोजन की तलाश में निकलता है और दोपहर तक घास–फूस, विभिन्न प्रकार के फल–फूल, पत्तियां, लौकी, कद्दू, तरबूज आदि सब्जियां एवं वनस्पति आदि खाता है। इसका प्रिय भोजन घास एवं रसीले फल हैं, किन्तु शुष्क स्थानों पर घास न मिलने पर यह छोटी–छोटी झाड़ियां एवं पत्तियां आदि खाता है। पौधे के ऊपरी भाग को खाने में इसे बड़ा आनन्द आता है। दोपहर की तेज धूप में यह लम्बी–लम्बी घास की ओट में या किसी छायादार वृक्ष के नीचे आराम करता है। धूप की गर्मी कम होने पर यह पुनः भोजन की तलाश में निकलता है और फिर रात को काफी देर तक चरता रहता है।

चिंकारा एक शर्मीला वन्य प्राणी है। यह मानव से हमेशा दूर रहना ही पसन्द करता है और चारे की कमी होने पर भी खेतों में कभी नहीं जाता। चिंकारा की एक अन्य विशेषता यह भी है कि यह गर्मियों की तेज धूप सरलता से सह लेता है और पानी के अभाव में भी सरलता से लम्बे समय तक रह सकता है। जीव वैज्ञानिकों का मत है कि रात्रि के समय ओस पड़ती है जिससे घास–फूस, छोटे–छोटे पौधों की पत्तियां एवं झाड़ियों में पानी की मात्रा अधिक हो जाती है। चिंकारा रात्रि के समय इन्हें खाकर अपने शरीर की जल की आवश्यकता पूरी कर लेता है। यह पानी पीते समय हिंसक पशुओं से बचने के लिये विशेष रूप से सावधान रहता है। चिंकारा हमेशा 20–25 के झुंड बनाकर नदी, तालाब या इसी प्रकार के पानी स्रोत के निकट पहुँचता है और उससे कुछ दूरी पर रूक जाता है। अब झुंड के एक–दो सदस्य पानी के पास जाकर थोड़ा–सा पानी पीते हैं और फिर झुंड में वापस आ जाते हैं। इसके बाद दूसरे एक–दो सदस्य जाते हैं और वे भी पहले वालों की तरह थोड़ा–सा पानी पीकर झुंड में लौट आते हैं। ऐसा वे कई बार करते हैं। जब उन्हें पूरा विश्वास हो जाता है कि जलस्रोत के निकट कोई हिंसक पशु नहीं है तभी पूरा झुंड जाकर पानी पीता है।

चिंकारा के सबसे बड़े शत्रु हैं– तेंदुआ और भेड़िया। ये प्रायः नर चिंकारा का ही शिकार करते हैं। नर चिंकारा अकेले विचरण करता है या झुंड से थोड़ा अलग रहता है और विश्राम करने के लिये प्रायः उन्हीं झाड़ियों की ओट में पहुँच जाता है, जहाँ पहले से ही तेंदुआ या भेड़िया इसकी प्रतीक्षा में छिपे रहते हैं। यह खतरे का आभास होने पर पूरी गति से छलांगें लगाता हुआ भागता है, किन्तु प्रायः दो–तीन सौ मीटर भागने के बाद रूक जाता है और पीछे मुड़कर शत्रु की स्थिति मालूम करने का प्रयास करता है। शत्रु की स्थिति मालूम होने के बाद यह पुनः भागता है और फिर रूककर शत्रु की स्थिति मालूम करता है। ऐसा बार–बार करने पर चिंकारा और उसके शत्रु के बीच की दूरी कम होती जाती है, जिससे प्रायः यह अपने शत्रु का भोजन बन जाता है।

शेर भी चिंकारा का शिकार करता है। भूखी शेरनी और उसके बड़े बच्चों के लिये चिंकारा का शिकार बड़ा आसान होता है। ये इसके पानी पीने के स्थान के निकट छिपकर बैठ जाते हैं और अवसर मिलते ही आक्रमण कर देते हैं। शेरनी और उसके बच्चे मैदानी भागों में चिंकारा का शिकार सिंहनी की तरह करते हैं।

गजेल की अनेक जातियां जंगलों की कटाई और शिकार के कारण विलुप्ति के कगार पर पहुँच गयी हैं। इनमें से एक चिंकारा भी है। चिंकारा की घटती हुई संख्या को देखते हुए भारत सरकार ने इसे विलुप्त प्रायः जीवों की सूची में शामिल कर लिया है तथा इसके शिकार पर भी प्रतिबंध लगा दिया है।

जीव-जन्तु ज्ञान

प्रस्तुति : प्रतीक्षा कुशवाह

★ सबसे बुद्धिमान मछली कौन–सी होती है?
- डाल्फिन।

★ कौन–सा जीव पानी नहीं पीता?
- अमेरिका का कंगारू रेट।

★ संसार में सबसे अधिक पशु किस देश में है?
- भारत में।

★ सबसे सुस्त जानवर कौन–सा है?
- स्लॉथ (दक्षिणी अमेरिका)।

★ सबसे बुद्धिमान जानवर कौन–सा माना जाता है?
- चिम्पांजी (बंदर)।

★ सबसे जहरीली मछली कौन–सी होती है?
- स्टोनफिश।

★ सबसे तेज रफ्तार किस मछली की है?
- सेलफिश की, जो 90 कि.मी. प्रति घंटा है।

★ कौन–सी मछली करंट पैदा करती है?
- तारपीडो (इलेक्ट्रिक ईल मछली)।

वैज्ञानिक जानकारी : डॉ. घमण्डीलाल अग्रवाल

विज्ञान प्रश्नोत्तरी

प्रश्न : शरीर के अन्य अंगों की तुलना में मस्तिष्क ऑक्सीजन अधिक क्यों प्रयोग करता है?

उत्तर : हालांकि मनुष्य के मस्तिष्क (Brain) का वजन आमतौरपर शरीर के कुल वजन का केवल 2 प्रतिशत ही होता है लेकिन सांस द्वारा ली गई ऑक्सीजन का 25 प्रतिशत भाग मस्तिष्क ही उपयोग में लाता है। इसका कारण यह है कि शरीर में सबसे अधिक कार्य मस्तिष्क को ही करना पड़ता है जिसके लिए ऑक्सीजन की आपूर्ति (Supply) लगातार होनी अनिवार्य है। यदि 10 मिनट भी मस्तिष्क को ऑक्सीजन न मिले, तो मस्तिष्क को काफी नुकसान हो सकता है।

प्रश्न : दूध से मक्खन को अलग करने के लिए दही का मंथन क्यों किया जाता है?

उत्तर : सुबह नाश्ते में ब्रेड के साथ मक्खन खाना तो तुम्हें अवश्य ही अच्छा लगता होगा। लेकिन मक्खन को निकालने के लिए कौन–सी विधि अपनाई जाती है, शायद तुम इससे अपरिचित होगे? दरअसल, जब दही को मथा जाता है तो मक्खन के साथ अपकेन्द्रीय बल द्वारा मक्खन के कण अलग हो जाते हैं। मक्खन के कण शेष कणों से हल्के होने के कारण वे लस्सी पर तैरने लगते हैं और सुगमतापूर्वक अलग किए जा सकते हैं। बस, यही कारण है कि दूध से मक्खन को अलग करने के लिए दही को मथा जाता है।

प्रश्न : कुछ दिनों तक उपयोग किए जाने के बाद रसोई गैस का सिलिंडर हल्का क्यों प्रतीत होता है?

उत्तर : आजकल घरों में खाना पकाने के लिए द्रवित पेट्रोलियम गैस (L.P.G.) का प्रयोग किया जाता है जो सिलिंडरों में भरकर घरों में पहुँचाई जाती है। दरअसल, खाना पकाने के उद्देश्य से रसोईघरों में प्रयुक्त की जाने वाली इस गैस में प्रोपेन, एथेन, ब्यूटेन तथा आइसोब्यूटेन नामक गैसों का मिश्रण होता है। ज्यों–ज्यों गैस खर्च होती जाती है त्यों–त्यों सिलिंडर का भार कम होता जाता है जिससे सिलिंडर हल्का प्रतीत होता है।

प्रश्न : दीवारों पर सफेदी करते समय उसमें 'नील' क्यों मिलाया जाता है?

उत्तर : प्रत्येक वर्ष त्योहारों और पर्व पर तुम अपने घरों पर सफेदी करके दीवारों को आकर्षक तो जरूर बनाते होगे। ऐसा किसलिए किया जाता है? दरअसल, समय बीतने के साथ–साथ घरों की दीवारें पीली पड़ने लगती हैं। पीलापन हटाने के लिए चूने में नीला रंग मिला दिया जाता है। नीला रंग मिला देने से चूना और अधिक सफेद हो जाता है जिससे दीवारें सफेद और चमकदार दिखाई देने लगती हैं।

प्यारी पुस्तक

बाल कविता : गोविन्द भारद्वाज

प्यारी–प्यारी पुस्तक है,
देती दिल पे दस्तक है।

अक्षर–अक्षर ज्ञान भरा है,
अशिक्षा का तिमिर हरा है।

ऊँचा करती मस्तक है,
प्यारी–प्यारी पुस्तक है।

जीवन का निर्माण करे,
जन–जन का कल्याण करे।

करती सेवा अब तक है,
प्यारी–प्यारी पुस्तक है।

चित्र सुंदर इसमें आते,
बालमन को ये लुभाते।

ये भरती ज्ञान अक्षत है,
प्यारी–प्यारी पुस्तक है।

बाल कविता : कीर्ति श्रीवास्तव

तितली रानी

तितली रानी बड़ी सयानी,
उपवन की तुम हो महारानी।
बगिया में तुम घूम–घूमकर,
करती फूलों की रखवाली।।

फूलों का पीकर रस,
तुम अपना जीवन चलाती।
इस फूल से उस फूल पर,
दिनभर तुम हो मंडराती।।

खिलखिलाता चमन रहता,
जब तुम अपने पंख फैलाती।
तुम्हें देख भंवरे भी झूमे,
तुम ऐसी छटा बिखराती।।

भारत में प्रथम

प्रस्तुति : भारत भूषण शुक्ल

★	भारतीय प्रथम महिला प्रधानमंत्री	– श्रीमती इन्दिरा गाँधी
★	भारतीय प्रथम महिला राष्ट्रपति	– श्रीमती प्रतिभा देवी सिंह पाटिल
★	प्रथम महिला राज्यपाल	– सरोजनी नायडू
★	प्रथम महिला स्पीकर	– शन्नो देवी
★	प्रथम महिला केन्द्रीय मंत्री	– राजकुमारी अमृत कौर
★	प्रथम महिला विधानसभा अध्यक्ष	– विजय लक्ष्मी पंडित
★	प्रथम महिला मुख्यमंत्री	– सुचेता कृपलानी
★	कांग्रेस की प्रथम महिला अध्यक्ष	– डॉ. एनी बेसेन्ट (1917)
★	एवरेस्ट पर चढ़ने वाली प्रथम महिला	– बछेन्द्री पाल (1984)
★	अन्तरिक्ष में जाने वाली प्रथम भारतीय महिला	– कल्पना चावला
★	दिल्ली के तख्त पर बैठने वाली प्रथम महिला	– रज़िया बेगम (1236)
★	प्रथम महिला वायुयान चालक	– दुर्गा बैनर्जी
★	एशियाड गोल्ड पदक विजेता प्रथम महिला	– कमलजीत सन्धू
★	ओलम्पिक पदक विजेता प्रथम महिला	– कर्णम मल्लेश्वरी
★	सुप्रीम कोर्ट की प्रथम महिला न्यायाधीश	– मीरा साहिब फातिमा बीबी
★	प्रथम महिला आई.पी.एस. अधिकारी	– किरण बेदी

जानकारी : विभा वर्मा

आओ, कुछ नई-नई बातें जानें

★ पूर्ण अंधकार की स्थिति में उल्लू को बिल्कुल भी दिखाई नहीं देता है।

★ रात के अन्धकार में बिल्ली की आँखों के चमकने का कारण उसकी आँख के अन्दरूनी हिस्से में स्थित कोशिकाओं की एक परत होती है, जिससे ही प्रकाश का परावर्तन होता है।

★ डाल्फिन मछली सोते समय भी अपनी एक आँख खुली रहती है।

★ किसी भी मछली के शरीर की परत पर पड़ी गोल धारियों को गिनकर ठीक उसी प्रकार उसकी आयु का पता लगा सकते हैं जिस प्रकार पेड़ के तने पर पड़ी गोल धारियों को देखकर पेड़ की उम्र बतायी जा सकती है।

★ दीपक की लौ का तापमान 1000 डिग्री सेंटीग्रेड से 2000 सेंटीग्रेड तक रहता है। इसके विपरीत मोमबत्ती की लौ का तापमान 1500 डिग्री सेंटीग्रेड के लगभग होता है क्योंकि दीपक की लौ में पानी भी निकलता है। यह पानी गैस की शक्ल में होता है। हाँ पर दीपक की लौ का सबसे ऊपरी हिस्सा सर्वाधिक ताप वाला होता है। ऊपरी हिस्से पर चम्मच रखकर कोई भी चीज हम गर्म कर सकते हैं।

जानकारी : विभा वर्मा

अनार में हैं गुण हजार

अनार फल तो है ही पर इसकी पत्तियां, बीज एवं फल भी बहुत गुणकारी होते हैं। आओ इसकी कुछ गुणकारी बातें जानें–

★ अनार के वृक्ष की लकड़ी के अलावा इसकी सभी चीजें इसकी औषधि निर्माण में काम आती हैं।

★ अनार के फूलों को छाया में सुखाकर बारीक पीसकर मंजन की तरह प्रयोग करने से दांतों में मजबूती आती है। इससे मसूढ़ों से खून आना भी बन्द हो जाता है। इसके सूखे पत्तों का मंजन भी बहुत गुणकारी होता है। मसूढ़ों से खून आना एवं पीप निकलना बन्द हो जाता है।

★ मुंह एवं गले के रोगों को नष्ट करने की क्षमता भी अनार में है।

★ अनारदाना भी मीठे अनार का ही बीज है। अनारदाना भी खट्टा–मीठा होता है।

★ अनार के रस को पानी में डालकर मुंह साफ करने से दांत दर्द की शिकायत दूर होती है। इससे मसूढ़ों का विकार भी नष्ट होता है।

★ अनार के छिलके को दूध में उबालकर पीने से खांसी खत्म होती है।

बोधकथा : राजेन्द्र परदेसी

सही कीमत

रामगढ़ में एक जौहरी रहता था। वह बड़ा गुणी और पारखी था। किसी चीज को एक बार देखकर ही उसका सही मूल्य बता देता था। इसी कारण उसके पास दूर–दूर से लोग अपनी वस्तु का वास्तविक मूल्य जानने के लिए आते रहते। धीरे–धीरे उसकी चर्चा वहाँ के राजा के कानों तक पहुँची। राजा ने जौहरी के गुण की परीक्षा लेने का निर्णय लिया। राजा ने उसे अपने दरबार में उपस्थित होने का आदेश दिया।

राजा के आदेश पर जौहरी दरबार में उपस्थित हुआ। वहाँ राजा ने जौहरी को बैठने के लिए आसन दिया। फिर अपनी बगल में बैठे राजकुमार की ओर इशारा करके कहा– मैं यह जानना चाहता हूँ कि मेरे राजकुमार की वास्तविक कीमत क्या है?

राजा का आदेश सुनकर जौहरी बहुत असमंजस में पड़ गया। उसने कभी किसी व्यक्ति का मूल्यांकन नहीं किया था। वह मन ही मन सोचने लगा कि मैं राजकुमार की कीमत क्या बताऊँ? अगर कीमत कम हुई तो राजा नाराज होकर दंडित कर देगा। अधिक होने पर क्या होगा, कुछ पता नहीं। जौहरी कुछ देर तक इसी सोच–विचार में पड़ा रहा। फिर बोला– राजन! काम थोड़ा मुश्किल है। इसलिए आप मुझे एक सप्ताह का समय दें।

''ठीक है। एक सप्ताह की मोहलत दी जा रही है। लेकिन एक सप्ताह के बाद आकर राजकुमार की सही कीमत नहीं बतायी तो लोगों को ठगने के आरोप में मृत्युदंड दिया जायेगा।'' राजा ने कहा।

राजा की बात सुनकर जौहरी अपने घर वापस आया। दो–तीन दिनों तक वह यही

सोचता रहा कि आखिर राजकुमार की सही कीमत कैसे बतायी जाये। जौहरी को परेशान देख उसके पिता ने उसकी परेशानी का कारण जानने के लिये पूछा– बेटा, क्या बात है? तुम परेशान नजर आ रहे हो?

जौहरी ने अपनी समस्या बतायी तो उसके पिता बोले– तुम व्यर्थ में चिन्ता मत करो। राजकुमार का मूल्य बताना बहुत आसान है। कल तुम राजा के सम्मुख जाकर कहना, राजन! राजकुमार के ललाट पर जो रेखाएं भाग्य ने खींच दी हैं। उनकी कीमत तो कोई लगा नहीं सकता। परन्तु यदि इन्हें हटा दिया जाये तो राजकुमार की सही कीमत दो कौड़ी की भी नहीं है।

दूसरे दिन जौहरी दरबार में उपस्थित हुआ तो राजा ने पूछा– राजकुमार की सही कीमत मालूम कर ली।

जौहरी बोला– हाँ, राजन।

''सही कीमत क्या है?'' राजा ने पूछा।

जौहरी राजकुमार के ललाट पर उंगलियां रखकर पिता द्वारा कही बातों को दोहरा दिया।

राजा सोचने लगा कि जौहरी ने सही कहा है कि भाग्य की कीमत कोई नहीं लगा सकता, जिसके कारण मेरा बेटा राजकुमार बन सका है। परन्तु आम आदमी की तरह इसे काम करके जीना पड़े तो शायद ही दो कौड़ी भी कमा सके।

जौहरी के मूल्यांकन से राजा बहुत खुश हुआ। उसके गुणों की प्रशंसा की और उसे ढेर सारा ईनाम देकर विदा किया।

★ ★ ★

बोधकथा : फेनम सौगानी

संचय

एक महाज्ञानी गुरु अपने शिष्यों के साथ घूमते हुए समुद्र किनारे पहुँचे। शिष्यों ने समुद्र किनारे उगे नारियल के पेड़ से नारियल तोड़े और बारी–बारी से उनका मीठा पानी गुरुजी को पिलाया।

पानी पीकर गुरु की प्यास शान्त हुई। तब उन्होंने अपने शिष्यों से पूछा– तुम यदि कोई बात पूछना चाहते हो तो पूछ सकते हो।

तभी एक शिष्य ने, अन्य शिष्यों की सहमति के आधार पर एक बात पूछी– गुरुजी! आप तो कहते थे कि दुनिया के सभी दरिया समुद्र में जा मिलते हैं फिर भी समुद्र का पानी इतना खारा क्यों है जबकि हर दरिया का पानी मीठा होता है।

गुरुजी ने कहा– बच्चो! यह समुद्र लेता ही लेता है, देता एक बूंद भी नहीं। जो केवल संचय करता है, उसमें कड़वाहट या खारेपन के अतिरिक्त और होगा ही क्या?

शिष्य गुरु का संकेत तुरन्त भांप गये व समझ चुके थे। यदि जीवन में किसी से कुछ ग्रहण करते हैं तो बदले में उसे भी कुछ देना ही चाहिए ताकि लेने–देने वाले के बीच में मिठास का अमर दरिया बहता रहे।

बाल कथा : ईलू रानी

जीवन में मिठास घोलो

प्रतिदिन की तरह उस दिन भी गुलाब के पौधे पर चार–पांच फूल खिले। तभी भंवरे ने आकर फूलों को चूमा और कहा– 'गुड मॉर्निंग।'

फूल कुछ कहते इसके पूर्व ही गुलाब का पौधा बोल उठा– भई! ये मेरे लाल तुम्हें क्या जानें? मेरी देह पर तो हर रोज फूल खिलते हैं और झरते हैं, जो फूल आज खिला, शायद ही वह दूसरे दिन का सूरज देख पाता है। यदि कोई फूल बच भी जाता है तो चाहने वाले बहुत हैं, वे तोड़कर ले जाते हैं। हाँ, तुम्हारे 'गुड मॉर्निंग' का मतलब बेचारे मेरे लाल क्या जानें?

सुनकर भंवरा अचरज करते हुए बोला– अरे मैंने तो फूलों को प्यार के साथ सुबह का नमस्कार किया था, किसका कितना जीवन है यह तो ईश्वर ही जानता है, लेकिन बोलने–चालने से कोई किसी का कुछ ले थोड़े न सकता है।

–भाई भंवरा! तुम्हारा कथन तो सत्य है, लेकिन मुझे देखो; मेरे शरीर पर कांटे हैं, मुझे इनकी चुभन दिन–रात सताया करती है। जब कोई मेरे फूलों को तोड़ता है तो चुभन और भी बढ़ जाती है, कारण जिन फूलों के लिए मैं

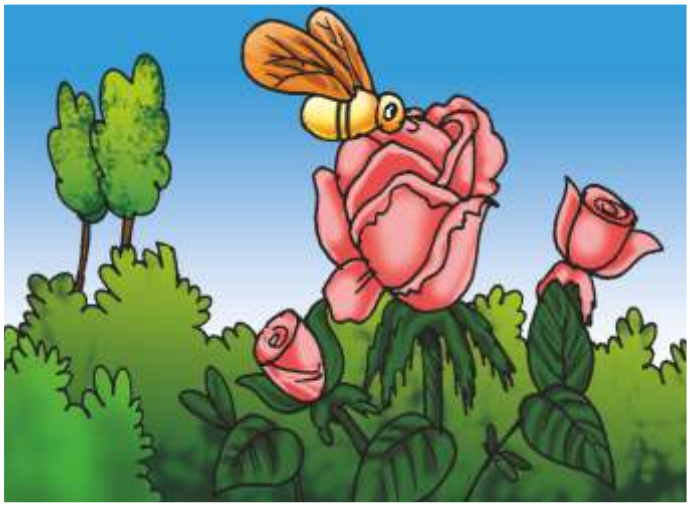

चुभन सहन करता हूँ, उन्हें हर कोई ले उड़ता है। बिन फूलों के मैं फिर से ठूंठ हो जाता हूँ, जब कई–कई दिनों तक मैं फूल प्रदान नहीं करता तो माली कैंची से मेरी कटाई–छंटाई कर देता है, इससे मेरा दुःख और भी बढ़ जाता है।

गुलाब के पौधे की बात को भंवरे के साथ–साथ तितली व शहद की मक्खी भी सुन रही थी।

तितली बोली– जीवन में सबको प्यार बांटो, यही खुशी है।

शहद की मक्खी बोली– जिन्दगी में मिठास घोलो, दूसरों की सेवा ही जिन्दगी है।

तभी गुनगुन करते भंवरे ने कहा– बहनों! आप दोनों की बातों में बहुत वजन है। आपने तो जिन्दगी की परिभाषा में इन्सानियत का रंग घोल दिया।

यह सुनकर गुलाब के पौधे को अहसास हुआ ''सचमुच जिन्दगी में प्यार बांटना, मिठास घोलना ही महान है।'' अब वह तीनों से बोला– मुझमें महक होते हुए भी मैं अपने आपको भूल गया था। बस, इसी पल से यह संकल्प लेता हूँ अपना दुख किसी के सम्मुख कभी प्रकट नहीं होने दूंगा। मैं महक के साथ प्यार और मिठास भी बेहिचक बांटूंगा।

सुनकर तितली, भंवरा और शहद की मक्खी बहुत खुश हुए। उन्होंने अब बारी–बारी से फूलों को चूमा तो फूलों में से भीनी–भीनी महक के साथ आवाज निकली– 'सुबह का नमस्कार।'

बस तभी से उनमें गहरी मित्रता हो गई और तितली, भंवरा व शहद की मक्खी प्रतिदिन गुलाब पर आकर मंडराने लगे।

कविता : डॉ. परशुराम शुक्ल

शोर मचाते हैं

हम सब बच्चे मिलकर हरदम,
शोर मचाते हैं।

रोज सबेरे उठकर पहले,
हम सब पढ़ने जाते।
और लंच में सबका खाना,
मिल–बैठकर खाते।

हा हा हू हू करके हँसते,
और हँसाते हैं। शोर ...

खाना खाकर पानी पीकर,
अपनी भूख मिटाते।
मिलकर साथ पढ़ाई करते,
आगे बढ़ते जाते।
छुट्टी की घंटी बजते ही,
दौड़ लगाते हैं। शोर ...

घर से पहले चढ़ पेड़ों पर,
आम तोड़ कर खाते।
छल ता ता ता खेल कबड्डी,
में भी दम अजमाते।
लड़ते और झगड़ते लेकिन,
साथ निभाते हैं। शोर ...

पास गाँव के कलकल करती,
प्यारी नदिया बहती।
गरमी में हम सब बच्चों से,
आओ आओ कहती।
कूद कूद कर छप छप इसमें,
खूब नहाते हैं। शोर ...

हम सब बच्चे मिलकर हरदम,
शोर मचाते हैं।

क्या आप जानते हैं?

★ पृथ्वी पर अब तक पाया जाने वाला सबसे बड़ा जानवर है– नीली ह्वेल। इसका भार लगभग 150 टन होता है। ये इतनी लम्बी होती है कि इसकी पीठ के ऊपर एक कतार में 8 हाथी खड़े हो सकते हैं। इसकी लम्बाई 30 मीटर तक हो सकती है।

★ ह्वेल शार्क विश्व की सबसे बड़ी मछली है। इसकी लम्बाई 15 मीटर और भार लगभग 40 टन होता है।

★ शुतुरमुर्ग विश्व का सबसे लम्बा तथा भारी पक्षी है। इसकी लम्बाई 2.5 मीटर तक होती है।

★ रेटिकुलेटिन पायथन (अजगर) 10 मीटर लम्बा होता है।

★ गिरगिट की आँखें एक–दूसरे से स्वतंत्र रहकर अलग–अलग दिशा में देख सकती हैं।

★ तुरन्त पैदा हुआ घड़ियाल उसी अंडे से तीन गुणा ज्यादा बड़ा होता है। जिस अंडे से वह निकलता है।

★ नर मच्छर कभी किसी को नहीं काटता, केवल मादा मच्छर ही काटती है।

★ कछुआ एक ऐसा जीव है जिसके दाँत नहीं होते।

★ कंगारू रेट एकमात्र ऐसा प्राणी है जो कभी पानी नहीं पीता।

★ भालू ऐसा विशेष प्राणी है जो जन्म के दो माह तक सोता है और बच्चों की तरह रोता है।

★ सेलफिश नामक मछली 80 कि.मी. प्रतिघंटे की रफ्तार से तैरती है।

★ डालफिन सभी मछलियों से बुद्धिमान मछली मानी जाती है।

★ एक तितली की 1200 आँखें होती हैं।

★ डालफिन मनुष्य की भाषा की नकल कर सकती है।

★ हाथी की सूंड में 4000 हड्डियां होती हैं।

★ घोड़ा खड़े–खड़े भी सो सकता है।

★ मधुमक्खियों को एक किलो शहद बनाने के लिए 40,000 फूलों से रस चूसना पड़ता है।

★ जिराफ जीभ से अपने कान साफ कर सकता है।

★ जिराफ पृथ्वी पर पाया जाने वाला सबसे लम्बा जानवर है। अपनी लम्बी गरदन के कारण यह एक दो मंजिला इमारत की ऊँचाई तक पहुँच सकता है। इसकी लम्बाई लगभग 5.5 मीटर होती है।

★ दो जेब्रा की धारियां कभी एक समान नहीं हो सकती। यानि सभी जेब्रा पर धारियों में भिन्नता मिलेगी।

★ उड़ने वाले सांप मलेशिया में पाये जाते हैं।

प्रस्तुति : ऊषा सभरवाल

किट्टी

चित्रांकन एवं लेखन
अजय कालड़ा

यह देख किट्टी ने अपने गुस्से को काबू करने की सोची। किट्टी अपने गुस्से को कंट्रोल करने का प्रयास करने लगी और दिन–प्रतिदिन उसकी कीलें कम होती गईं।
फिर एक दिन ऐसा आया कि किट्टी ने एक भी कील नहीं ठोकी। जब ऐसे दो–तीन दिन बीत गये तो वह अपने पिताजी से बोली–
पिताजी, अब मुझे गुस्सा नहीं आता। मैंने पिछले दो–तीन दिनों से फट्टे में एक भी कील नहीं ठोकी है।
बहुत अच्छा किट्टी। अब तुम हर उस दिन फट्टे से एक कील निकालना जिस दिन तुम्हें गुस्सा नहीं आए।

उसके बाद किट्टी ने एक कील निकालनी शुरू की। जिस दिन उसे गुस्सा नहीं आता था।
धीरे–धीरे उसके फट्टे में से सारी कीलें निकल गईं। वह फिर फट्टा लेकर अपने पिताजी के पास पहुँची।
पिताजी अब सारी कीलें निकल गईं। अब क्या करूँ।

किट्टी यह लकड़ी का फट्टा दिखाओ। देखो इसमें कितने छेद हैं।
जब हम गुस्से में होते हैं तब गुस्सा हमारे शरीर को इसी तरह नुकसान पहुँचाता है जैसे कीलों ने इस फट्टे को नुकसान पहुँचाया।
अब यह लकड़ी का फट्टा कभी भी पहले जैसा नहीं रहेगा। वैसे ही गुस्सा भी हमारे शरीर को नुकसान पहुँचाता है। इसलिए हमें अपने गुस्से पर काबू रखना चाहिए।
मैं समझ गई पिताजी। अब मैं कभी गुस्सा नहीं करूँगी।

प्रेरक–प्रसंग : दीपांशु जैन

खिलाड़ियों की लाड़ली

उन्नीसवीं सदी का अंतिम दशक था, बेसबॉल का खेल तब तक अमरीका में काफी लोकप्रिय हो चुका था। जगह–जगह क्लब बन चुके थे और उनके बीच मैच होते रहते थे। अमरीका में एक राष्ट्रीय प्रतियोगिता भी शुरू हो चुकी थी।

फिलाडेल्फिया क्लब की ओर से एक व्यक्ति खेलता था, जिसका नाम था सिड फारर।

सिड फारर अपने जमाने के सबसे अच्छे खिलाड़ियों में से था और अपने दल की ओर से सबसे पहले बैटिंग करने आता था।

सिड की एक लड़की थी, जिसका नाम था जेरल्डीन। वह जब भी खेलने के लिए जाता, अपनी नन्ही–सी बेटी को भी साथ ले जाता।

जेरल्डीन इतनी प्यारी बच्ची थी कि क्लब के बाकी खिलाड़ियों को भी उससे मोह हो गया। वह इतनी लोकप्रिय हो गयी कि उन्होंने उसे अपने सौभाग्यचिन्ह के रूप में स्वीकार कर लिया।

अब फिलाडेल्फिया क्लब के खिलाड़ी जहाँ कहीं भी मैच खेलने जाते, जेरल्डीन को भी अपने साथ जरूर ले जाते। वह भी उनके साथ बड़ा खुश रहती और उन्हें तरह–तरह के गीत सुनाती रहती।

जेरल्डीन जब कुछ बड़ी हुई, तो उसके पिता को पता चला कि भगवान ने उसे बड़ी मधुर आवाज दी है। पिता सोचने लगे। फिर उन्होंने तय किया कि वह अपनी बेटी को संगीत और गायन की शिक्षा दिलवाएंगे।

सिड फारर ने जेरल्डीन को संगीत की कक्षा में भेजना शुरू कर दिया, लेकिन इससे सिड के सामने एक समस्या भी उठ खड़ी हुई।

सिड फारर पेशेवर खिलाड़ी था, लेकिन उन दिनों खिलाड़ियों को इतना पैसा नहीं मिलता था कि वे हर तरह का शौक पूरा कर सके। जेरल्डीन को गायन सिखाने में काफी खर्च आ रहा था। सिड फारर अपने और घर के खर्च में कमी करके उसकी फीस भरता, फिर भी परेशानियां बढ़ती ही जा रही थीं।

आखिर सिड फारर ने अपनी कमाई बढ़ाने का एक जरिया ढूंढ निकाला।

अब वह हर मैच के बाद खेल मैदान में ही रूक जाता। जब बाकी सब लोग चले जाते, तो वह दर्शकों की खाली सीटों और उनके नीचे की जमीन पर गिरे कचरे को टटोलने लगता। चुन–चुनकर वह उस कचरे में से टिन (कलई) की पत्तियां उठा लेता। दर्शक तरह–तरह की चीजें खाते रहते थे। चॉकलेट, खट्टी–मीठी गोलियां, दवा की गोलियां और ये सारी चीजें टिन की पत्तियों में ही लिपटी रहती थी।

सिड फारर टिन की पत्तियों को इकट्ठा करता और फिर उन्हें कबाड़ियों के यहाँ बेच आता। इससे उसे हर हफ्ते कुछ डॉलर मिल जाते।

कुछ हफ्ते ऐसे ही निकल गये। फिर एक दिन किसी खिलाड़ी ने सिड फारर को पत्तियां इकट्ठा करते देख लिया। पहले तो देखने वाले को अजीब लगा कि उनका एक साथी कूड़ा चुनता फिरता है। फिर उससे रहा नहीं गया, तो उसने फारर से पूछ लिया।

फारर ने अपनी समस्या उसे बता दी। साथी खिलाड़ी की सहानुभूति जाग उठी। उसने दल के सभी खिलाड़ियों को यह बात बता दी और यह भी कहा कि जेरल्डीन हम सबको भी प्यारी है। वह हमारी भी बच्ची है। हमारे लिए सौभाग्य बनकर आयी है। हमें फारर की मदद करनी चाहिए।

सबने हामी भर दी।

हामी तो भर दी, लेकिन पैसा कहाँ था? सबकी हालत तो सिड फारर जैसी ही थी।

अन्त में यह फैसला लिया गया कि अब हर मैच के बाद अकेला सिड ही टिन की पत्तियां नहीं चुनेगा, सब खिलाड़ी चुनेंगे और चुनकर सिड फारर को दे देंगे।

अगले हफ्ते से ही उन्होंने यह काम शुरू कर दिया।

अब यह बात दर्शकों से कैसे छिपी रह सकती थी? उन्हें भी पता चल गया कि फारर और उसके साथी हर मैच के बाद क्या करते रहते हैं और क्यों करते रहते हैं?

दर्शक इस बात से बड़े प्रभावित हुए कि एक गरीब खिलाड़ी पिता अपनी बच्ची को संगीत की विद्या दिलवाने के लिए ही इतना हीन काम कर रहा है। वह खुद ही नहीं, उसके साथी भी उस बच्ची का भविष्य बनाने के लिए कूड़ा छानते फिरते हैं। दर्शकों ने भी फारर की मदद करने का निश्चय कर लिया।

नतीजा यह हुआ कि अब हर हफ्ते टिन की पत्तियों की बोरियों की बोरियां फिलाडेल्फिया के खेल के मैदान में पहुँचने लगीं।

फारर को अब किसी तरह की परेशानी नहीं रही। उन पत्तियों को बेच–बेचकर वह जेरल्डीन की शिक्षा को पूरा करवाता रहा।

फिर वह दिन भी आया, जब सिड फारर की बेटी, बेसबॉल खिलाड़ियों की चहेती, जेरल्डीन ने अपनी शिक्षा पूर्ण कर ली। वह ओपेरा गायिका बन गयी। कुछ ही वर्षों में उसकी गायिकी पूरे अमेरिका में चर्चा का विषय बन गयी।

जेरल्डीन फारर को अमरीका की महानतम ओपेरा–गायिका होने का श्रेय प्राप्त है। बरसों तक वह न्यूयॉर्क के मेट्रोपोलिटन ओपेरा हाउस में अपनी कोयल जैसी मधुर आवाज से श्रोताओं का मन मोहती रही। उसकी ख्याति सारी दुनिया में फैली।

लेकिन जेरल्डीन यह कभी नहीं भूली कि उसकी ख्याति के पीछे बेसबॉल के खिलाड़ियों का प्यार और श्रम छिपा हुआ है।

जानकारी : डॉ. विनोद गुप्ता

तीन आंखों वाला टुआटेरा

क्या आपने किसी भी जीव की तीन आंखें देखी है? मगर टुआटेरा नामक सरीसृप वर्ग के इस प्राणी की तीन आंखें होती हैं। टुआटेरा को सफेनोडीन पंक्अेट्स नाम से भी जाना जाता है। यद्यपि दिखने में यह छिपकली जैसा लगता है लेकिन आंतरिक संरचना छिपकली से काफी भिन्न होती है।

टुआटेरा अब से करोड़ों वर्ष पहले भी पृथ्वी पर पाए जाते थे लेकिन समय के साथ उनकी संरचना में बदलाव आ गया है। टुआटेरा 70 सेंटीमीटर तक लम्बे होते हैं तथा वजन एक किलोग्राम तक हो सकता है। इसकी दो आंखें तो आम प्राणियों की तरह होती है लेकिन शंकु आकृति की तीसरी आंख सिर के बीच मस्तिष्क के ऊपर एक छेद में होती है जिसे पाइनिअल आई कहते हैं। इस आंख के ऊपर एक झिल्ली होती है जो क्षैतिज अवस्था में बंद रहती है। इस आंख का उसके लिए क्या महत्व है इस बारे में कुछ कहा नहीं जा सकता।

टुआटेरा डरपोक किस्म का प्राणी है जो बिलों में रहता है। दिन के समय विश्राम करता है तथा रात में क्रियाशील होता है तथा भोजन की तलाश में निकलता है। कीड़े–मकोड़े, चिड़ियों के अंडे आदि इसके पसंदीदा भोजन हैं। मादा अपने बिल से कुछ दूर अंडे देती है। अंडों से बच्चे निकलने में एक वर्ष का समय लगता है। उनकी उम्र काफी अधिक होती है। कुछ के तो 100 वर्ष तक जीवित रहने के प्रमाण मिले हैं। वैसे अब यह विलुप्ति के कगार पर है।

कहानी : साबिर हुसैन

सोनम

सोनम अपनी सहेली दिव्या के साथ जैसे ही घर से बाहर आई, राजन बैसाखी के सहारे चलता हुआ उसके पास आ गया, वह शायद उसी की प्रतीक्षा कर रहा था।

–दीदी–दीदी, चॉकलेट लो।– राजन बोला।

–क्या हर समय दीदी–दीदी करता रहता है, जा मुझे चॉकलेट नहीं लेनी है। हर समय परेशान ही करता रहता है।– सोनम झिड़कते हुए बोली।

राजन उसे देखता रह गया। अपमान से उसकी आँखों में आंसू आ गये। वह बैसाखी के सहारे चलता हुआ अपने घर के दरवाजे पर जाकर बैठ गया, जहाँ उसकी टॉफी, चॉकलेट, बिस्कुट आदि की छोटी–सी दुकान लगी हुई थी। राजन को पोलियो हो गया था। उसका एक पैर बेकार है, वह बैसाखी के सहारे चलता है। स्कूल से आकर वह अपनी यह छोटी–सी दुकान लगा लेता है और वहीं पढ़ता रहता है।

राजन के पिता पिछले साल एक सड़क दुर्घटना में गम्भीर रूप से घायल हो गये थे। उनके इलाज में उनकी दुकान भी समाप्त हो गई थी और अन्त में उनकी मृत्यु हो गई। राजन और उसकी माँ पर मुसीबतों का पहाड़ ही टूट पड़ा था। ऐसे बुरे समय में राजन के पिता के मित्र ने बहुत सहारा दिया था। राजन की मम्मी सिलाई जानती थीं, उन्होंने सिलाई मशीनें लेकर दी थीं और सिलाई की दुकान खुलवा दी थी, जिससे उनका खर्च आसानी से चलने लगा।

–कौन है वह?– सोनम के साथ चलते हुए दिव्या ने पूछा।

हमारे घर के सामने ही इसका घर है और वहीं यह चॉकलेट, बिस्कुट आदि की दुकान लगाता है। मम्मी थोड़ा प्रेम से बोल लेती हैं और यह लंगड़ा मेरा भाई ही बन बैठा है।– मुँह बनाते हुए सोनम बोली।

–ऐसे भी न बोलो। वह तो स्नेह से चॉकलेट खाने के लिए दे रहा था।– दिव्या बोली।

–चॉकलेट मुझे देता है और मम्मी उसे पैसे दे देती है। – सोनम बोली।

सोनम के पिता एक उच्च अधिकारी हैं। इस बात का सोनम को बहुत गर्व है। उसे जहाँ भी अवसर मिलता है वह बताने लगती है कि वह बड़े अधिकारी की बेटी है। वह स्कूल में भी कुछ

लड़कियों से ही बात करती है। राजन से तो वह बहुत चिढ़ती है। पहले राजन उसके घर में भी चला जाता था।

एक दिन जब मम्मी घर पर नहीं थी और राजन घर में पहुँच गया था तो सोनम ने उसे घर से भगा दिया था। तब से वह उसके घर नहीं जाता। पिछले दिनों सोनम बीमार हो गई थी तब राजन उसे देखने गया था और काफी देर बैठा उससे बातें करता रहा था। उस समय राजन का आना उसे अच्छा लगा था और उसने स्वयं कह दिया था कि छुट्टी होने पर उसके पास आ जाया करे उसका मन बहल जाता है। जब तक सोनम बीमार रही राजन उसके पास आता रहा था। सोनम ठीक हो गई थी और आज वह स्कूल जा रही थी।

सोनम दिव्या के साथ चल रही थी तभी एक मारुति वेन सोनम के बिल्कुल पास आकर रूकी और दो आदमी तेजी से वेन से बाहर आये और सोनम को वेन के अन्दर घसीटकर ले गये।

यह देख दिव्या जोर–जोर से बचाओ–बचाओ चिल्लाने लगी। राजन ने देखा, सोनम को बदमाश मारुति वेन में पकड़कर ले गये हैं। राजन ने जल्दी से वेन का नम्बर अपनी हथेली पर लिख लिया। मारुति वेन तेजी से चली गई। राजन ने देखा शोर सुनकर वहाँ बहुत से लोग आ गये थे।

–गाड़ी का नम्बर क्या था?– लोग दिव्या से पूछ रहे थे।

–मैं नम्बर देख ही नहीं पाई।– दिव्या बोली।

–मुझे मालूम है गाड़ी का नम्बर।– राजन बोला।

–यह अच्छा किया तुमने वेन का नम्बर नोट कर लिया।– कहते हुए वहाँ खड़े सुरजीत अंकल ने अपना मोबाइल निकाला और पुलिस को फोन कर दिया कि सोनम का अपहरण हो गया है और अपहरणकर्ताओं की वेन का नम्बर भी बता दिया।

फोन मिलते ही पुलिस ने भी सभी जगह सूचना दे दी कि लड़की का अपहरण हो गया है और वेन का नम्बर बता दिया। कुछ ही देर में पुलिस ने वेन को पकड़ लिया। अपहरणकर्ता पकड़े गये।

सोनम के मम्मी–पापा को पता चला कि राजन की होशियारी के कारण सोनम का अपहरण होने से बच गया और अपराधी भी पकड़े गये तो वे राजन के पास पहुँचे।

–बेटा, तुमने मुझ पर बहुत बड़ा उपकार किया है।– सोनम के पापा बोले।

–भाई ने बहन को बचाया, इसमें उपकार कैसा? यह तो मेरा कर्तव्य था।– राजन बोला।

सोनम चुपचाप खड़ी पश्चाताप के आंसू बहा रही थी कि वह जिसको अपमानित करती रही उसी ने उसे बचाया।

सुकरात की सहनशीलता

यूनान में एक महान दार्शनिक हुए हैं। उनका नाम था सुकरात। वे अपने विचारों में इतने डूबे रहते थे कि अक्सर उन्हें घर पहुँचने में देर हो जाया करती थी। उनकी पत्नी उनकी राह देखती–देखती थक जाती थी पर वे अपनी आदत को बदल नहीं पाए।

एक दिन की बात है। वे अपनी मित्र–मण्डली में बैठे रहने के कारण बहुत देरी से घर आए। उनकी पत्नी झगड़ालू और गर्म स्वभाव वाली तो थी ही और फिर देरी के कारण वह बहुत झल्ला भी गई थी। अतः घर आते ही उसने सुकरात को खरी–खोटी सुनानी शुरू कर दीं। सुकरात चुपचाप उसकी झिड़कियां सुनते रहे और खाना खाते रहें। जब वह खाना खा चुके तो उन्होंने क्षमा भाव से अपनी पत्नी की ओर देखा। इससे उसका गुस्सा और भी तेज हो गया। वह जोर–जोर से बोलने लगी।

सुकरात ने देखा कि उसका गुस्सा शान्त नहीं हो रहा है तो वे घर से बाहर जाने लगे। उसकी पत्नी इस बात से और भी गुस्सा हो गई। वह अपने गुस्से पर काबू नहीं कर पाई और घर में सफेदी करने के लिए पड़े हुए चुने के घोल को उन पर उड़ेल दिया।

सुकरात ने हँसकर कहा– मैंने सुना था कि पहले बादल गरजते हैं और फिर बरसते हैं। अतः जब तुम गरज रही थी तो मैंने देखा अब बरसोगी भी। पर चलो इतने में ही काम चल गया। बिजली तो नहीं गिरी।

यह सुनते ही उनकी पत्नी एकदम शान्त हो गई और उसे अपने कृत्य पर पछतावा हुआ।

प्रस्तुति : किशोर डैनियल

सद्वाक्य

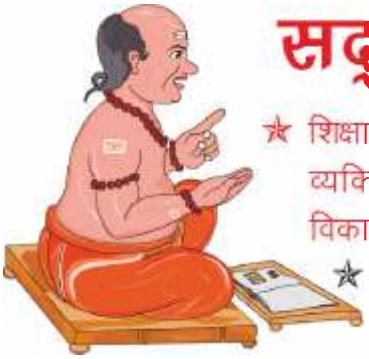

★ शिक्षा का उद्देश्य है व्यक्तित्व का पूर्ण विकास।

★ श्रद्धा से शिष्य की परख होती है।

★ क्रोध मनुष्य की उन्नति में बाधक है।

★ क्रोध मनुष्य के विवेक को समाप्त कर देता है।

★ माता–पिता कभी सन्तान का बुरा नहीं चाहते इसलिए उनके इरादों की कद्र करनी चाहिए।

★ सोच–समझकर बोलें, आपका वार्तालाप आपकी छवि बनाने और बिगाड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

★ भाग्य कुछ भी नहीं कर सकता है यह तो केवल कल्पना है।

★ धरती के सारे खजाने भी एक खोया हुआ क्षण वापस नहीं ला सकते।

प्रस्तुति : कु. प्रतीक्षा कुशवाहा

पढ़ो और हँसो

मच्छर का बच्चा पहली बार उड़ा। जब वापिस आया तो उसके पिता ने पूछा– कैसा लगा उड़के।

बच्चा बोला– बहुत अच्छा। जिधर भी गया लोग तालियां बजा रहे थे।

बेटा : (पिता से) पिताजी, मुझे तीन विषयों में एक समान अंक मिले हैं।

पिता :बेटा, यह तो बड़ी अच्छी बात है। जरा हम भी तो सुने, हमारे बेटे ने एक समान कितने अंक प्राप्त किये हैं?

बेटा :पिताजी, शून्य, शून्य, शून्य।

ग्राहक : चूहे मारने की दवा मिलेगी क्या?

दुकानदार : जी हाँ यह लीजिये।

ग्राहक : चूहे मारने का पाप तुम्हें लगेगा या मुझे।

दुकानदार : किसी को भी नहीं।

ग्राहक : भला वह कैसे?

दुकानदार : चूहे मरेंगे तब ना।

– श्याम बिल्दानी 'सादगी' (बड़नेरा)

डॉक्टर : (रामू से) अब तबीयत कैसी है?

रामू : जी, पहले से ज्यादा खराब है।

डॉक्टर : दवाई ली थी?

रामू : आपने दी और मैंने ली थी।

डॉक्टर : अरे भई! दवाई पी ली थी?

रामू : नहीं दवाई तो लाल थी।

डॉक्टर : (खीझकर) दवाई को पी लिया था?

रामू : नहीं पीलिया तो मुझे था।

एक कंजूस व्यक्ति को करंट लगा।

उसकी पत्नी ने पूछा– आप ठीक तो हो ना।

व्यक्ति बोला– मैं ठीक हूँ। तू मीटर देख, यूनिट कितना बढ़ा है।

अर्पिता : (निष्ठा से) कोई ऐसी चीज बताओ जो ब्रेकफास्ट में नहीं खाई जा सकती?

निष्ठा : एक क्या! मैं दो बताती हूँ।

अर्पिता : ठीक है। बताओ।

निष्ठा : लंच और डिनर।

एक नौजवान कमर में रस्सी बांधकर पहाड़ पर चढ़ने की ट्रेनिंग ले रहा था। तभी उसने अपने गाइड से पूछा– सर, रस्सी एकदम मजबूत है ना! टूटेगी तो नहीं।

गाइड बोला– फिक्र मत करो, हमारे पास रस्सियों की कमी नहीं है।

पिता : (बेटे से) बेटा, तुम बाजार से गर्म मसाला क्यों नहीं लाये?

बेटा : दरअसल, पिताजी 'गर्म मसाला' को जैसे ही मैंने हाथ में लिया तो वह बिल्कुल ठंडा लगा इसलिए मैं उसे नहीं लाया।

अध्यापक : राजू बताओ, आज का पेपर आसान था या मुश्किल?

राजू : जी सर, पढ़ने में तो आसान था। पर करने में मुश्किल था।

सोनू : (माँ से) माँ, मैं अपनी कक्षा में तृतीय स्थान पर आया हूँ।

माँ : (खुश होकर) अच्छा यह तो बताओ तुम्हारी कक्षा में कितने बच्चे थे?

सोनू : तीन।

– पुलकित राय (करोलबाग, नई दिल्ली)

अध्यापक : (छात्र से) बताओ स्वर और व्यंजन में क्या अन्तर है?

छात्र : सर, स्वर तो मुँह से बाहर निकालते हैं और व्यंजन को मुंह के अन्दर लेते हैं।

शिक्षिका : राहुल बताओ, हाथी की क्या पहचान होती है?

राहुल : मैडम जी, हाथी की दो पूंछ होती हैं एक आगे और एक पीछे।

– गुरचरण आनन्द (लुधियाना)

CROSSWORD SOLUTION

	1 ना		2 ब	या	लि	3 स
4 बा	ई	ब	ल			ग्रा
	जी		5 रा	ज	6 को	ट
7 प	रि	श्र	म		कि	
	या			8 जु	ला	9 ई
10 द्रौ		11 सं	त	रा		रा
12 प	चा	स		13 सि	ड	नी
दी		14 द	र्श	क		

आलेख : डॉ. विनोद गुप्ता

क्या है यूरेनियम

यूरेनियम का नाम तो आपने सुना होगा पर क्या आप जानते हैं कि इस धातु की खोज सन् 1789 में मार्टिन हैनरिक क्लाप्रौथ नामक वैज्ञानिक ने 'पिच ब्लैन्ड' नामक खनिज से की थी। शुरू में उन्होंने इसका नाम यूरेनिट रखा था जिसे कुछ समय बाद बदलकर यूरेनस ग्रह के नाम पर यूरेनियम रख दिया गया।

सबसे भारी धातु

यूरेनियम प्रकृति में मिलने वाली सबसे भारी धातु है। इसके एक क्यूबिक फुट टुकड़े का भार करीब आधा टन होता है। यह धातु सफेद चमकदार रंग की होती है लेकिन वायुमंडल के संपर्क में आने से काली पड़ जाती है।

यूरेनियम पृथ्वी की पपड़ी में संयुक्त अवस्था में मिलता है। पृथ्वी की पपड़ी के 10 लाख भागों में से चार यूरेनियम के होते हैं। इसके अलावा चट्टानों में यह यौगिक रूप में भी मिलता है। 'पिच ब्लैन्ड' यूरेनियम का एक ऐसा अयस्क है जिसमें दूसरे अयस्कों की तुलना में अधिक यूरेनियम होता है।

यूरेनियम इस्पात की तुलना में थोड़ी नरम धातु है जिसका गलनांक प्वाइंट है 1132 डिग्री सेंटीग्रेट।

विविध उपयोग

यूरेनियम बहुउपयोगी धातु है। यूरेनियम से ही रेडियो किरणें निकलती हैं। ये किरणें मानव जाति के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध हुई हैं। सन् 1896 में वैज्ञानिक हैनरी वैकरल ने यूरेनियम से रेडियो एक्टीविटी का पता लगाया था।

इसकी नाभिको से निकली रेडियो किरणें कृषि उद्योग, जीवविज्ञान तथा चिकित्सा विज्ञान में महत्व रखती हैं।

यूरेनियम का इस्तेमाल एक्स–किरणें तथा गामा किरणों को अवशोषित करने में भी किया जाता है। कभी इसका इस्तेमाल रेशम और पोर्सलीने के बर्तनों पर रंगाई करने के लिए भी होता था।

परमाणु ऊर्जा के क्षेत्र में यूरेनियम की महत्ता किसी से छिपी नहीं है। सन् 1938 में ही इसके परमाणुओं पर न्यूट्रान की बौछार करके नाभिकीय विखंडन की खोज की

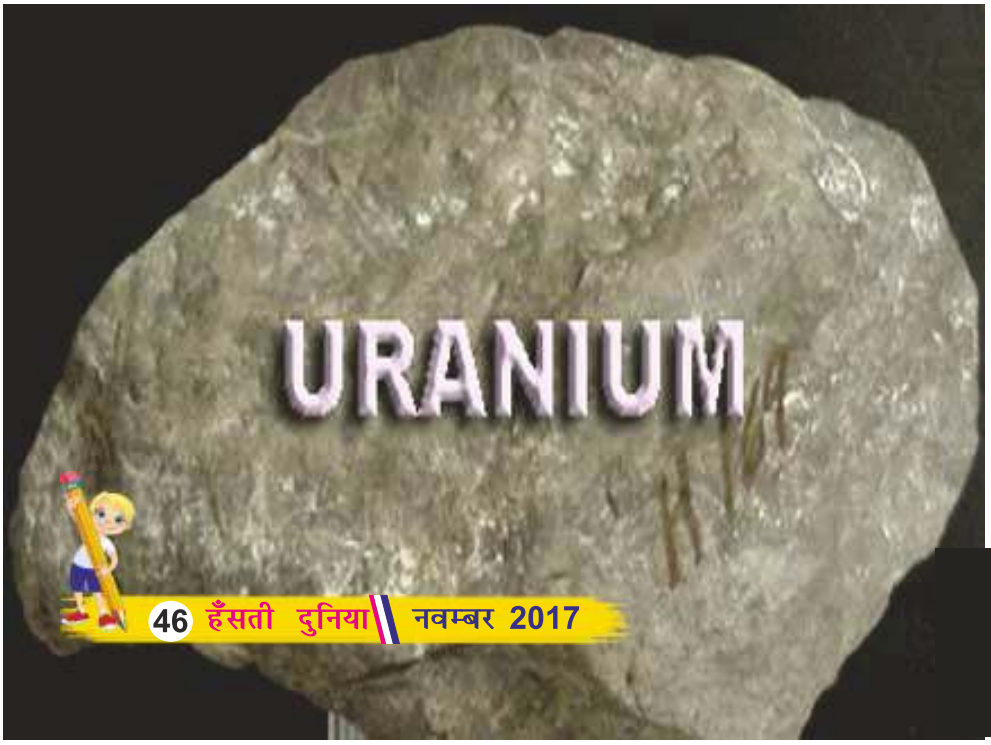

गई थी। यह वह प्रक्रिया है जिसमें यूरेनियम–235 के नाभिक पर न्यूट्रोनों की बौछार करके दो हिस्सों में तोड़ा जाता है जिससे काफी अधिक मात्रा में ऊर्जा पैदा होती है। आज विश्व के प्रायः देश इस प्रक्रिया को ऊर्जा उत्पादन के लिए इस्तेमाल कर रहे हैं। इससे कितनी ऊर्जा पैदा होती है, इसका अनुमान आप इस बात से लगा सकते हैं कि इसकी एक पौंड से इतनी ऊर्जा पैदा होती है जितनी कि 30 लाख पौंड कोयले को जलाकर पैदा होती है।

आपने परमाणु बम का नाम तो सुना होगा, पर शायद आप यह नहीं जानते कि इसी धातु से परमाणु बम का निर्माण होता है। यूरेनियम के नाभिकीय विखंडन की प्रक्रिया को प्रयोग में लाकर सन् 1945 में परमाणु बम बनाया गया था। इस परमाणु बम को जापान के हिरोशिमा नगर पर डाला गया था। इस बम की वजह से समूचा शहर पलभर में तहस–नहस हो गया था।

यूरेनियम के भंडार

सबसे ज्यादा यूरेनियम के भंडार आस्ट्रेलिया में हैं, जो कि दुनियाभर में मिलने वाले कुल यूरेनियम का करीब 23 प्रतिशत है।

आंध्रप्रदेश में कडप्पा जिले के तुम्मलपल्ली गाँव में दुनिया का सबसे बड़ा यूरेनियम भंडार मौजूद है। परमाणु ऊर्जा आयोग के प्रमुख एस बनर्जी के अनुसार, यहाँ एक लाख 50 हजार टन यूरेनियम मौजूद हैं। वैज्ञानिकों ने लगातार चार साल शोध करके इन भंडारों का पता लगाया है।

भारत के अलावा अफ्रीका, कनाडा, चैकोसलोवाकिया, अमेरिका, इंग्लैंड आदि में यूरेनियम धातु के अयस्क मिलते हैं जिनसे यूरेनियम प्राप्त की जाती है।

नई टेक्नोलॉजी

चीन ने यूरेनियम की कमी से निपटने के लिए एक ऐसी टेक्नोलॉजी विकसित की है जिसके जरिए इस्तेमाल किए गए परमाणु ईंधन का पुनर्शोधन संभव हो सकेगा और यूरेनियम का दोहन 60 गुना बढ़ जाएगा। गौरतलब है कि चीन दुनिया का सबसे बड़ा ऊर्जा उपभोक्ता है। परमाणु ऊर्जा वर्तमान में दुनिया की 11 प्रतिशत जरूरतों को पूरा कर रही है।

सितम्बर अंक रंग भरो के श्रेष्ठ चित्र

1 **आयशा अरोड़ा** 10 वर्ष
12/14, अशोक नगर,
नई दिल्ली

2 **सुहावनी** 11 वर्ष
प्लॉट नं. 802, डी.डी.ए. फ्लैट,
मोतिया खान, पहाड़गंज (दिल्ली)

3 **नितिन** 10 वर्ष
गाँव : धड़, पोस्ट : हजारा,
जिला : जालंधर (पंजाब)

4 **प्रियांशु कुमार** 11 वर्ष
म.नं. 401, करमगंज,
इटावा (यू.पी.)

5 **अमन गोयल** 14 वर्ष
पुराना बाजार, गर्ल्स स्कूल के पास,
सैपऊ, जिला : धौलपुर (राज.)

इनके अतिरिक्त जिनकी प्रविष्टियों को पसंद किया गया वे हैं–

लवलीन, नवी, निहारिका, परी, निश्चय (मोहाली),
महक (झाकड़ी, शिमला),
अमृता, आसमा (सरायरैचन्द),
महक (मालवीय नगर, दिल्ली),
अंजली (देहरादून),
अविशा (मनोहर नगर, कानपुर),
प्राची (शहडोल),
अद्वितीय (सुन्दर नगर, अजमेर),
निम्रता (बुढलाडा),
जयंत (नवापारा),
अल्का (बंशीपुर),
सुरीली (लुधियाना),
साधना (फिरोजपुर),
आयान (रेवाड़ी),
मनस्वी (मनमाड),
सुरिन्दर (शेओपुर),
साक्षी (परोला),
तान्या (पाचोरा), जावनी (सल्लागढ़),
नवदिशा (लोकनायक पुरम, दिल्ली)।

नवम्बर अंक रंग भरो

सामने के पृष्ठ पर एक चित्र दिया गया है। इस चित्र में सुन्दर–सुन्दर रंग भरकर 20 नवम्बर तक कार्यालय 'हँसती दुनिया', निरंकारी कॉम्प्लेक्स, निरंकारी सरोवर के पास, निरंकारी कालोनी, दिल्ली–110009 को भेज दें।

पांच श्रेष्ठ चित्रों के प्रतिभागियों के नाम (पते सहित) जनवरी अंक में प्रकाशित किये जाएंगे।

चित्र के नीचे दिये गये रिक्त स्थान पर अपना नाम और पता अवश्य भरें।

15 वर्ष की आयु तक के बच्चे ही रंग भरकर भेज सकते हैं।

रंग भरो

नाम ..... आयु .....

पुत्र/पुत्री .....

पूरा पता .....

.....

.....पिन कोड .....

आपके पत्र मिले

मैं हँसती दुनिया का नियमित पाठक हूँ और मैं इसका बेसब्री से इन्तजार करता हूँ।

अगस्त अंक में 'बहादुरी का पुरस्कार' (राजकुमार जैन राजन) तथा 'पर्यावरण और वृक्ष' (अंकुश्री) ज्ञानवर्द्धक एवं शिक्षाप्रद हैं।

'आजादी की शान तिरंगा' और 'हरियाली का मौसम आया' (हरजीत निषाद), 'स्वाधीनता का दिन' (गफूर स्नेही) कविताएं भी अच्छी लगीं।

स्तम्भों में 'पढो और हँसो', 'अनमोल वचन' तथा 'विज्ञान प्रश्नोत्तरी' भी अच्छी लगीं।

लेख 'गुजरात का राजकीय पशु : सिंह (डॉ. परशुराम शुक्ल) एवं 'दर्जिन चिड़िया' (किरणबाला) जानकारी भरपूर हैं।

मैं बस इतना कह सकता हूँ कि हँसती दुनिया अच्छी पत्रिका है और यह सन्देश देती है कि–

हँसती दुनिया पढाते जाओ।
सबका ज्ञान बढाते जाओ।।
और
हँसती दुनिया पढ़ते जाओ।
सबको अच्छा बनाओ जाओ।।

–अभिषेक सिंह (ग्राम–डोभा)

मैं हँसती दुनिया की सदस्य हूँ। मुझे हर महीने इस पत्रिका का बेसब्री से इन्तजार रहता है। हँसती दुनिया वास्तव में सबको हँसाने का काम करती है। इसकी कहानियां शिक्षाप्रद होती हैं जो हमें ज्ञान देती हैं और हमें अच्छाई की राह में चलना सिखाती है।

मेरी प्रभु से यही प्रार्थना है कि यह पत्रिका दिन–दुगनी रात–चौगुनी तरक्की करे।

–ऋचा गोयल (दिल्ली)

जन्मदिवस की भेंट

जन्मदिवस पर पापा बोले,
बेटे तुम क्या लोगे?
बेटा बोला–
खेल–खिलौने नहीं चाहिये,
टॉफी, चॉकलेट, रैकेट, बैट
नहीं चाहिये।

मुझको तो बस सुन्दर–सुन्दर,
अच्छी–अच्छी पांच किताबें ला दो।
पढ़कर उन्हें सुनाऊंगा मैं,
जो पढ़ना–लिखना सीख रहे हैं।
पूरे मन से,
सुनकर वे खुश हो जायेंगे।

मैं भी खुश हो जाऊंगा,
इस तरह बर्थडे मन जायेगा।
डियर डैडी! अच्छे पापा,
ला दोगे ना?
अच्छी सुन्दर पांच किताबें।

– रूपनारायण काबरा (जयपुर)

सद्गुरु माता सविंदर हरदेव जी महाराज की पावन छत्रछाया में

70 वाँ निरंकारी सन्त समागम

18, 19 व 20 नवम्बर 2017

स्थान: समागम मैदान, निरंकारी चौक के निकट, निरंकारी सरोवर के सामने, बुराड़ी रोड, दिल्ली-9

-: कार्यक्रम :-

18 नवम्बर 2017 (शनिवार)

सत्संग	:	सायं 3.00 बजे से रात्रि 9.30 बजे
सद्गुरु माता जी के प्रवचन	:	रात्रि 9.30 बजे

19 नवम्बर 2017 (रविवार)

सेवादल रैली	:	प्रात: 11.00 बजे से दोपहर 1.00 बजे
सत्संग	:	सायं 3.00 बजे से रात्रि 9.30 बजे
सद्गुरु माता जी के प्रवचन	:	रात्रि 9.30 बजे

20 नवम्बर 2017 (सोमवार)

जनरल बॉडी मीटिंग:प्रात: 11.00 से दोपहर 1.00 बजे तक

नोट: यह मीटिंग भी ग्राउण्ड नं. 2, समागम पण्डाल में ही होगी।

सत्संग	:	सायं 3 बजे से रात्रि 9.45 बजे
कवि सम्मेलन	:	सायं 5.00 बजे से 7.00 बजे
सद्गुरु माता जी के प्रवचन	:	रात्रि 9.45 बजे

विशेष नोट: गुरुवन्दना का कार्यक्रम 21 नवम्बर, 2017 (मंगलवार) को सायं 6.00 से रात्रि 9.00 बजे तक होगा।

(सी.एल. गुलाटी)
सचिव (मुख्यालय)
सन्त निरंकारी मण्डल, दिल्ली - 9

Registered with the Registrar of Newspaper For India Under RNI No. 25672/73 : Delhi Postal Regd. No. DL-(N)-01/0136/2015-17
Licence No. U (DN)-23/2015-17
Licenced to post without Pre-payment

निरंकारी पत्र-पत्रिकाएं पढ़ें और पढ़ाएं!

हँसती दुनिया	सन्त निरंकारी	एक नज़र
(चार भाषाओं में)	(ग्यारह भाषाओं में)	(तीन भाषाओं में)

'सन्त निरंकारी', 'हँसती दुनिया' (हिन्दी, पंजाबी व अंग्रेजी) एवं 'एक नज़र' (हिन्दी/पंजाबी) की सदस्यता के लिए सम्पर्क करें

पत्रिका विभाग, निरंकारी कॉम्प्लेक्स, निरंकारी सरोवर के पास, निरंकारी कालोनी, दिल्ली-110009

Ph. 011–47660200, E-mail : patrika@nirankari.org

सन्त निरंकारी, हँसती दुनिया, एक नज़र (मराठी) व सन्त निरंकारी (नेपाली) की सदस्यता के लिए सम्पर्क करें

Sant Nirankari Satsang Bhawan

1st Floor, 50, Morbag Road, Naigaon, Dadar (E) MUMBAI - 400 014 (Mah.)

e-mail : chandunirankari@yahoo.com & marathi@nirankari.org

अन्य भाषाओं की पत्रिकाओं की सदस्यता के लिए निम्नानुसार सम्पर्क करें

TAMIL

Sant Nirankari Satsang Bhawan,
#7, Govindan Street,
Ayavoo Naidu Colony, Aminji Karai,
CHENNAI-600 029 (T.N.)
Ph. 044-23740830

ORIYA

Sant Nirankari Satsang Bhawan,
Kazidiha, Post : Madhupatna,
CUTTACK-753 010 (Orissa)
Ph. 0671-2341250

TELUGU

Sant Nirankari Satsang Bhawan,
No. 6-2-970, Khairtabad,
HYDERABAD- Pin : 500 029 (TS)
Ph. 040-23317679

GUJRATI

Sant Nirankari Satsang Bhawan,
31, Pratapganj,
VADODARA-390022 (Guj.)
Ph. 0265-2750068

KANNADA

Sant Nirankari Satsang Bhawan,
88, Rattanvillas Road, Southend Circle,
Basavangudi, BENGALURU-560 023 (Karnataka)
Ph. 080-26577212

BANGLA

Sant Nirankari Satsang Bhawan,
1-D, Nazar Ali Lane, Near Beck Bagan,
KOLKATA-700 019
Ph. 033-22871658

पत्र-पत्रिकाओं के प्रसार अभियान में योगदान देकर सद्गुरु माता जी के आशीर्वाद के पात्र बनें

Posted at NDPSO, Prescribed dates 21th & 22nd. Date of Publication: 16th & 17th (Advance Month)